अब तक सारे भारत में

२००० से भी अधिक बार मंचस्थ

हिन्दी के एकमात्र नाटक

नेफा की एक शाम

से सम्बन्धित

कुछ ऐतिहासिक घटनाएँ

१ केन्द्रीय सूचना तथा प्रसारण मत्रालय का विशेष पुरस्कार।

२ उत्तर प्रदेश राज्य का प्रथम पुरस्कार (प्रस्तुतीकरण)।

३ महाराष्ट्र राज्य का पुरस्कार (लेखन)।

४ बगाल राज्य पुरस्कार (लेखन-प्रस्तुतीकरण)।

५ दिल्ली प्रदेश पुरस्कार (लेखन-प्रस्तुतीकरण)।

६ अडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह हिन्दी परिषद् द्वारा पुरस्कार।

७ साप्ताहिक हिन्दुस्तान मे धारावाहिक प्रकाशन।

८ हिन्दी का प्रथम नाटक जिसके सात वर्षो मे छह सस्करण निकल चुके है।

चीनी आक्रमण पर आधारित रोमाचकारी नाटक

नेफा की एक शाम

ज्ञानदेव अग्निहोत्री

राष्ट्रभाषा प्रकाशन
५-बी नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-

○ वितरक
उमेश प्रकाशन
५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली ६

○ मुद्रक
ओरिएण्टल कम्पोजिंग एजेंसी
चर्खेवालान, दिल्ली, द्वारा
हरिहर प्रेस, दिल्ली-६

○ संस्करण
छठा
१९७२

○ मूल्य
३.५०

NEFA KI EK SHAM
(Play based on Chinese aggression)
by
Gyandev Agnihotri
Rs. 3·50

'माटी जागी रे' के पश्चात् 'नेफा की एक शाम' मेरा दूसरा नाटक है। 'नेफा को एक शाम' वैसे तो सम-सामयिक पृष्ठभूमि पर ही है, पर मै, केवल, ऐसा नही मानता। मै समझता हूँ, यह नाटक मानव के उन सम्बन्धो की पुनर्व्याख्या करने का प्रयास करता है जो किसी देशाचल मे बाह्य आक्रमण के समय होने चाहिए।

चीनी आक्रमण के प्रतिक्रिया-स्वरूप अनेकानेक छोटी-बडी कृतियो का जन्म हो चुका है। अधिकाश मे महज उच्छ्वास और नारेबाजी का ही बाहुल्य है। लगभग ऐसी सभी रचनाओ मे नाट्य-लेखन जैसी दुरूह साहित्यिक विधा की एक अनिवार्य आवश्यकता अपेक्षित हो गई है और वह है अनुभूति की तीव्रता, प्रखरता और वास्तविकता। कदाचित् 'नेफा की एक शाम' इस कमी को दूर करे। इसके अतिरिक्त युद्ध-साहित्य को लेकर प्रबुद्ध व्यक्तियो के दृष्टिकोण बराबर सामने आते रहे है। लग-भग सभी ने एक मत से यही कहा है कि चीनी आक्रमण के परिवेश मे लिखा गया साहित्य घासलेटी और निरर्थक है। यह तथ्य भी उसी सत्य से प्रेरित हुआ है। पर वास्तविक अनुभूति आए कहाँ से ? भारत ने अभी युद्ध देखा ही कहाँ है ? द्वितीय महायुद्ध मे जापानी केवल दरवाजे खटखटाकर लौट गए। उसके वाद हमारी सीमाओ का अतिक्रमण इस नवीन शत्रु ने किया। इस दुर्दान्त आक्रामक ने केवल दरवाजे ही नही खटखटाए वरन् रक्त, विध्वंस और छल के खूनी पजो पर चलता हुआ घरो के अन्दर भी घुस आया। कम-से-कम उत्तरी सीमाचल के निवा-सियो ने तो वह सव देख ही लिया जो हम मैदानो के लोग न देख पाए कि एक बर्बर शत्रु क्या होता है। यह वात प्रकृति की

मुस्कानो जैसे उन भोले-भाले आदिवासियो ने तो समझ ही ली होगी। उनमे अनुभूति अपनी पूरी तीव्रता के साथ जागी है। उनकी इस अनुभूति को मैने भी थोडा-बहुत स्पर्श करने का और उसे आत्मसात् करने का प्रयास किया है।

नेफा से लौटे हुए प्रेस-रिपोर्टरो से, छुट्टी पर आए हुए सैनिको से और आदिवासियो के झुण्डों से मैने सक्रिय सम्पर्क स्थापित कर उनकी प्रतिक्रियाओ को समझने का प्रयास किया है। धीरे-धीरे अनुभूतियो की तीव्रता बढती गई, प्रतिक्रियाओ के ताने-बाने स्पष्ट हो गए और अचानक ही जैसे पर्दा खुल गया हो। मुझे जैसे सब-कुछ स्पष्ट दिखने लगा हो। नेफा की वह सियाँग नदी, कुकुरमुत्तो की आकृति वाली आदिवासियो की झोपडियाँ—पहाडियो के धुँधलके से सहसा निकलते हुए आक्रामक के कुरूप टैंक, भारी फौजी गाडियो और छल-कपट के मुखौटे पहने टिड्डी-दल सदृश चीनी सैनिक, एक-एक करके सब-कुछ साफ—बिल्कुल साफ दिखने लगा। भारतीय जवानो के सुदृढ तरतीबी से बढते चरण, पत्थरो को मोम की टहनियो की तरह झुका देने वाले माँ के सपूतो का अद्भुत शौर्य और एक मानवीय हिमालय की रचना का अदम्य कार्य; और इस चित्र मे ऊँची-नीची हिमश्रृङ्खलाओ मे बसे उन आदिवासियो का आश्चर्यजनक प्रतिरोध, अपनी बर्फीली घाटी की रक्षा के दृढ सकल्पो की अग्नि से प्रखर, देवदूतो जैसे आदिवासी, इन जागी हुई जनजातियो ने चीनी आक्रमण के समय जो कुछ किया, वह अब कहानी बन चुका है। यही कहानी इस नाटक की कथा-वस्तु है।

चीनी आक्रमण ने भारतीय जनमानस को जो करेट छूने-सा झटका दिया है, उसका स्वागत ही है। आइए, इसे हम 'शॉक-

थिरापी' समझे और यह सदैव स्मरण रखे कि जहाँ यह नाटक समाप्त होता है वही एक नए अध्याय का प्रारम्भ है। सच ही, जो कुछ अभी तक हुआ वह केवल एक प्रारम्भ है। यह बात समस्त भारत की प्रतिध्वनि है जो नाटक के अन्त मे 'भातई' के मुख से उद्भासित होती है "यह शुरूआत है—शुरूआत"।

नाटक अगर नाटक है तो उसे मच की कसौटी पर उत्तीर्ण होना होगा। मच पर ही उसे रग, रूप और आकार मिलेगा।

जीवन की गहन अनुभूतियो को यदि इस नाटक ने सरलता और सक्षेप मे मूर्तिमान किया होगा, वृत्तियो को अनावृत करने के साथ-साथ यदि आत्माओ को खोलकर दिखा दिया होगा, कलात्मक, शिल्पगत सगठनात्मक सकल्पो को सयोजित करने के साथ-साथ यदि उनकी अपनी विशिष्टता सुरक्षित रही होगी तो 'नेफा की एक शाम' मच ढूँढ लेगा।

इस नाटक के सृजन के दिनो मे, इसे शीघ्र पूरा करने के लिए मेरे कलाकार मित्र डेनिस, इब्राहीम, शरत, वीरेन्द्र और निर्मल का जो स्नेहपूर्ण आग्रह रहा है—उसके लिए मै इन सभी का आभारी हूँ, विशेष रूप से कलकत्ते की विमला गुप्ता का जिनके सुझावो ने इस सस्करण मे स्थान पाया है।

ज्ञानदेव अग्निहोत्री

यह छठा संस्करण

किसी भी नाट्य कृति के बारे मे जिसे लोगो ने बहुत अधिक सराहा है, कुछ भी कहना कठिन है। आज भी आश्चर्य होता है 'नेफा की एक शाम' की लोकप्रियता देखकर। आलोचक, रगशिल्पी, नाट्य-प्रेमी सर्व यह स्वीकार करते है कि इस शताब्दी मे किसी एक हिन्दी नाटक के इतने अधिक प्रदर्शन नही हुए जितने 'नेफा की एक शाम' के हुए है।

अनुमति के लिए पत्र-व्यवहार का पता :

ज्ञानदेव अग्निहोत्री ८/७७, आर्यनगर, कानपुर

यह

नाटक

समर्पित है

मातई को : जिसमे समूचे भारत की आत्मा गूँजती है।

गोगो को जो कहीं-न-कहीं सक्रिय होगा।

नीमों और देवल को : जो देश के लिए जी गए।

फौजी को · जिसके कदमो पर यह देश खडा है।

सुहाली, वांगचू और

फुँगशी को : जो साँपो की परम्परा के उत्तराधिकारी है।

और अन्त मे

शीकाकाई को . जिसकी लालटेन की रोशनी फैलेगी।

पात्र परिचय

मातई		नीमो, देवल की माँ, अवस्था ५० वर्ष।
सुहाली	:	नीमो की होने वाली पत्नी, अवस्था २२ वर्ष।
शीकाकाई	:	तवाँग से भागकर आई हुई मोनपा युवती, अवस्था १८ वर्ष।
नीमो	:	मातई का बड़ा बेटा, अवस्था २५ वर्ष।
देवल		मातई का छोटा बेटा, अवस्था २० वर्ष।
गोगो		गुरिल्ला दल का सरदार, अवस्था लगभग ५० वर्ष।
फौजी		भारतीय सेना का एक जवान, अवस्था २५ वर्ष।
वांगचू		चीनी खोज दस्ते का नायक, अवस्था २५ वर्ष।
फुंगशी		चीनी खोज दस्ते का सदस्य, अवस्था २३ वर्ष।

प्रथम अंक

[सियांग नदी से दूर एक ऊँची पहाड़ी। बाई ओर आदिजातियो की शैली की छोटी-सी झोपडी बनी है। झोपडी के बाहर तीन-चार छोटे-बडे पत्थर पड़े है जो बैठने के काम आते है। पृष्ठभूमि मे ऊँची-नीची पहाडियॉ दिखाई पडती है जिनकी चोटियो पर वर्फ जमी है। झोपडी के पीछे पूरी लम्बाई मे एक पुल बना है जो मंच के दोनो अन्तिम किनारो को जोडता हे। पुल के ठीक बीचो-बीच पहाडी नाले का मुँह है। इम पुल पर एक साथ चार-छ आदमी खडे हो मकते हैं और इधर-उधर सरलता से निकल सकते है। दाहिनी ओर पत्थर की ऊँची-नीची सीढियॉ है जो पुल पर चढने और उतरने मे काम आती है। ऐसा लगता है कि ये सीढियाँ वही पडे पत्थर को तराशकर बनाई गई हैं। पुल के दोनो ओर की रेलिग काले बांस को चीरकर बनाई गई है। नाले का मुँह सफेद है। झोपडी की दीवारें गेरुए रग से पुती है। गेरुए रंग के ऊपर विभिन्न प्रकार की आदिवासी योद्धाओ, पशु-पक्षियो, जानवरो की आकृतियाँ सफेद खडिया मिट्टी से बनी है। झोपडी के दरवाजे पर दो लम्बे बाँस हैं जिनके सिरो पर दो भयंकर मानव-आकृतियो के काले मुखौटे लगे हैं।

पर्दा उठने से पहले पहाडी चिडियो का कलरव सुनाई पडने लगता है। दूर पृष्ठभूमि मे आदिजातियो के समूह-नृत्य और सहगान के तेज स्वरो की अन्तिम पंक्तियाँ सुनाई पडती हैं।

पर्दा उठता है।

मंच पर कोहरा छाया है। कोहरे को चीरकर सूरज की पहली किरणें पुल और झोंपडी की छत को अलोकित कर रही है। मातई झोंपड़ी से निकलकर बाहर आती है। मातई एक बार आसमान की ओर देखकर पुल की ओर दौडती है। पुल पर खडे होकर वह इधर-उधर आवाज देती है। उसकी आवाज पहाड़ियों मे गूँजती है।]

मातई (जोर से चिल्लाकर) देवल हो····· बेटा · बेटा !

[धीरे-धीरे बर्फीली हवाओ का शोर उभरता है। मातई अपने उडते हुए कपड़ो को समेटकर पुल की सीढियाँ उतरकर नीचे आती है। क्षण-भर बाद पुल की बाईं ओर से सुहाली का मुस्कराते हुए प्रवेश। वह लगभग बाईस वर्ष की एक सुन्दर-सी युवती है। सुहाली पुल के बीचो-बीच आकर खडी हो जाती है। नीमो उसी ओर से दौड़ता हुआ आता है। उसके हाथ मे एक पहाड़ी फूल है। सुहाली इशारो से उससे कुछ कहती है। नीमो उत्तर मे मुस्कराकर अपने दोनों हाथों से आँखें बन्द कर लेता है। सुहाली दबे पैरो सीढियों से उतरकर नाले मे छुप जाती है। नीमो आँखें खोलकर इधर-उधर देखता है। पृष्ठभूमि मे समूह-गान की ध्वनि तेज होकर धीमी पडने लगती हैं। नीमो सुहाली को मीठे स्वर मे पुकारता हुआ नीचे उतरता है। वह नाले के सामने आकर खडा हो जाता है। इधर-उधर

देखकर नीमो नाले मे झाँकता है। सुहाली खिलखिला-कर हँस पड़ती है। नीमो हँसते हुए हाथ बढ़ाकर सुहाली को सहारा देकर बाहर निकालता है। सुहाली नीमो की ओर पीठ करके खड़ी हो जाती है। नीमो जगली फूल उसके जूड़े मे खोस देता है।]

[झोंपड़ी से मातई का प्रवेश]

मातई : नीमो ··देवल नही आया ? अब तो सुबह होने को है।

[सूरज का प्रकाश धीरे-धीरे मंच पर फैलने लगता है]

नीमो (बेरुखी से) आज रात मोगुप मे भी नही था।

मातई . (साश्चर्य) मोगुप मे भी नही था ? तो फिर कहाँ चला गया ?

नीमो अक्सर चला जाता है।

मातई अक्सर चला जाता है ? कहाँ ?

नीमो मैं क्या जानूँ ! अपोग पीकर किसी पहाडी चट्टान पर सो गया होगा।

मातई · (बिगड़कर) कैसी बात करता है तू ? देवल ऐसा नही है।

नीमो : हाँ, माँ ! दुनिया-भर की सब अच्छाई देवल मे है और सब बुराई मुझमे।

मातई यह तो मैंने नही कहा।

नीमो . तुम न कहो तो क्या ? इतना तो कोई भी समझ

सकता है।

मातई : क्यों रे नीमों ! तू कैसा बड़ा भाई है ? कभी तो देवल को प्यार से देखा कर !

नीमों : और अगर मै यही सवाल तुमसे करूँ ? कभी तो मुझे प्यार से देखा करो, तो ?

मातई : यह तेरी आवाज नही है। जब से इस मुई को तू लाया है तब से तेरी आँखे बदल गई है, समझा ?

[सुहाली मातई से इशारे मे यह कहने की कोशिश करती है कि मुझे क्यो दोषी ठहरा रही हो]

(तेज स्वर मे) तुझे न कहूँ तो और किसे कहूँ ? जब से तू आई है, इसकी जीभ हमेशा जहर उगलती है।

नीमों : (तेज स्वर मे) माँ ! सुहाली को कुछ कहा तो अच्छा न होगा।

मातई . हाँ-हाँ, तू मेरी जान ले लेगा। बडा आया है ! (सुहाली से) अरी ओ बजारिन ! अगर तूने मेरा घर उजाडा तो याद रख, सौ बिजलियाँ गिरेगी तुझपर !

नीमों : (चीखकर) माँ !

[सुहाली झुककर मातई से माफी-सी माँगती है]

मातई : अरी ओ गूँगी ! अब इतनी भली मानुस न बन। न जाने कौन-सी चुडैल तुझमे रहती है, जो तू इतनी सुन्दर लगती है। अरी ठहर जा, सच्चे बाबा को आने दे ; जहाँ उसने तुझे छाल की धूनी दी और लाल मिर्चो का शरबत पिलाया कि बस, सब ठीक हो जाएगा।

नीमो : मै सुहाली को सच्चे बाबा के सामने नही पडने दूँगा, माँ !

मातई . तू कैसे पडने देगा। अरे तुझी पर तो इसने टोटका किया है। एक अँधेरी और तूफानी रात को यह अचानक झरने के पास पाई गई—और तब से तू लट्टू है इसपर। यह भी न पता लगाया—कहाँ से आई है, कौन है। मै कहती हूँ किसी दिन रात मे यह नागिन बनकर तुझे डस लेगी।

नीमों : तुम्हे एक गूँगी औरत को भला-बुरा कहते शर्म नही आती ?

मातई अब देखो। अरे ओरे ! अपनी माँ को ऊँची-नीची बात कह रहा है ? अरे, तुझपर सौ बिजलियाँ गिरेगी।

नीमो . (सुहाली से) सुहाली, अपोग ले आओ मेरे लिए। [सुहाली मातई को अजीब-अजीब आँखो से देखते हुए अन्दर जाती है]

मातई . (प्यार से) ओ मेरे बेटा ! तुझे कैसे समझाऊँ ? बडा जिद्दी है तू। केबँग भला सुहाली को तेरी ..

नीमों (बात काटकर) मुझे केबँग के लोगो की परवाह नही है, माँ !

मातई (साश्चर्य) केबँग के सब लोगो की मर्जी तोडेगा तू ?

नीमों . हाँ, अगर जरूरत पडी तो।

माँ : फिर कैसे रहेगा गाँव मे ?

नीमों : गाँव छोड़ दूँगा।

माँ : अरे ओरे पागल, गाँव छोड़ देगा ? अपनी माँ से दूर चला जाएगा ? अरे, तुझपर सौ बिजलियाँ गिरे। तेरा कलेजा तो बिल्कुल पत्थर है, पत्थर।

नीमों : और तुम्हारे कलेजे मे कौन-सा शहद भरा है, माँ ! जब से सुहाली यहाँ आई है तब से बराबर तुम लोग उसे नफरत की निगाहो से देखते हो।

माँ : क्या कह रहा है रे ?

नीमों : सही कह रहा हूँ। तुम और देवल दोनो। सुहाली की आवाज दोनी पोलो ने अपने पास बुला ली है, तभी न तुम लोग इसपर जुलुम करते हो।

माँ : जुलुम ? अरे ओरे, कौन-सा जुलुम हो गया इस मुई चुडैल पर। मास-रोटी खाकर तमाम रात पोनुँग मे तेरे साथ थिरकती रहती है।

नीमों : देख माँ, तू नाराज हो या खुश—मैं अपने मन की करूँगा। सोच तो, ऐसी बीवी मुफ्त मे कहाँ मिलेगी ?

माँ : अरे ओ ! पता भी है किस कबीले की है ?

नीमों : उसके दाहिने हाथ का गोदना नही देखा है तुमने ? (कुछ रुककर) अगर सफद पहाडी वाले गाँव मे शादी रचाता तो कम-से-कम दो बीसी मिथुन लग जाते। यह गूँगी तो सेत मे आ टपकी है।

माँ : (मंच से पीछे हटते हुए) उई, ओ ! अरे तुझपर तो

उस डाकिन का टोटका सर पर चढ़कर बोल रहा है।

[मातई भय-मिश्रित आश्चर्य से नीमो को देखती है। नीमो अचानक हँस पड़ता है। अन्दर से सुहाली लकडी के प्याले मे अपोग लाती है। मातई सुहाली को घूरते हुए अन्दर चली जाती है। सुहाली धीमे-धीमे सिसकते हुए अपने आँसू पोछती है]

नीमो : (पात्र लेकर) तुम फिकर न करो, सुहाली! बस इतना बतला दो मुझे, अगर केवग के लोगो ने मेरी बात न मानी तो क्या तुम मेरा साथ दोगी?

[सुहाली सहमति-सूचक सिर हिलाती है]

तुम मेरे साथ चलोगी?

[सुहाली सहमति-सूचक सिर हिलाती है]

(उत्तेजित स्वर मे) ओ मेरी सोन कबूतरी! तेरे लिए मै एक बार सारी दुनिया से टकरा सकता हूँ। तू फिकर न कर। यहाँ से दूर, गोरे बादलो के उस पार मै अपना घोसला बनाऊँगा और तुझे बडे सरदार की बेटी की तरह रखूँगा।

[सुहाली भावावेश मे अपनी आँखें बन्द कर लेती है। नीमो और सुहाली एक-दूसरे की ओर मुह करके खडे है। नीमो दोनो हाथो से सुहाली का मुह ऊँचा करके उसे गौर से देखता है। क्षण-भर बाद देवल का पुल पर से प्रवेश। वह धीरे-धीरे नीचे उतरकर आता है]

नीमों : (व्यंग्य से) आ गए तुम?

[देवल कोई जवाब नही देता]

कहाँ गए थे ? मोशुप मे सब तुम्हे पूछ रहे थे ।

[देवल कोई जवाब नही देता]

शायद अपोग पीकर कही और सो गए थे ?

देवल : (अनसुनी करके) माँ कहाँ है ?

नीमो : अन्दर है । (व्यंग्य से) तुम्हारे लिए चावल की रोटियाँ, पत्तू का साग और आलुक की खीर तैयार कर रही है ।

[देवल बिना कुछ कहे अन्दर चलने लगता है]

और सुनो !

[देवल ठिठक जाता है । नीमो धीरे-धीरे उसके पास आता है]

(कटु मुस्कान के साथ) एक वार मुझे भी वहाँ ले चलो, जहाँ तुम अक्सर चले जाते हो ।

[देवल नीमो पर एक उड़ती नजर फेंककर अन्दर जाने लगता है]

कम-से-कम यह तो वता दो कि वह कैसी है !

देवल : (तेज स्वर मे) वड़े भइया !

नीमो . (ठठाकर हँसता है) क्या अपने गाँव मे तुम्हे कोई लडकी पसन्द नही आती जो दूर-दूर की पहाडियों मे मारे-मारे फिरते हो ?

देवल : तुम गलत समझ रहे हो, वडे भइया !

नीमो . हाँ, केवग के और लोग भी गलत समझ रहे है ।

न जाने कितनी बार साँझ के झुटपुटे मे तुझे झरने वाली पहाडी की तरफ जाते देखा गया है।

देवल . यह झूठ है।

नीमों . यह झूठ है ? सुहाली, इधर आ। पूरे चाँद की रात तूने देवल को झरने के उस ओर जाते देखा था न ?

[सुहाली सहमति-सूचक सिर हिलाती है]

और इसके साथ गोगो सरदार भी थे ?

[सुहाली सहमति-सूचक सिर हिलाती है]

और अब तू न शिकार पर जाता है और न भूम पर काम करते।

देवल : जाऊँगा।

नीमो . (तेज स्वर मे) कब जाएगा ?

देवल : चिल्ला क्यो रहे हो ? कह तो रहा हूँ, जाऊँगा।

नीमों : पर कब ?

देवल . (नीमो की आँखो को गौर से देखते हुए) जब वह गूँगी हमारे गाँव से बाहर चली जाएगी।

नीमों (छुरे पर हाथ रखकर) देवल··!

देवल · इसे तुम क्या जानो ! जब तुम अपोग पीकर बेहोश हो जाते हो, तब यह और लोगो से आँखे लडाती है।

नीमों : (छुरा निकालकर चीखता है) मै कहता हूँ, चुप हो

जा, नही तो तेरे पिरान निकाल लूँगा ।

देवल . मै तो चुप था । तुम्ही मेरा मुँह खुलवाते हो ।

नीमों : (छुरा लेकर आगे बढ़ता है) नीच कमीने, मै तुझे जान से मार डालूँगा ।

[झोपड़ी से अचानक मातई का प्रवेश]

मातई (चीखकर) नीमो ! अरे ओरे ! यह क्या पागलपन है ? छोड दे छुरा ! छोड !

[नीमो देवल को घूरते हुए छुरा खोस लेता है]

नीमों . इसने आज फिर सुहाली को बुरी बात कही, माँ ! सच कहता हूँ किसी दिन मै इसे जिन्दा गाड़ दूँगा ।

मातई . (देवल के पास आकर) अरे ओरे ! क्यो बोलता है इसके बीच मे ? जानता नही यह पिसाचिनी है ! (सुहाली के पास जाकर) अब तू मेरे घर मे जरूर मार-काट कराएगी । अरी ओ चुडैल भवानी, मुझे और मेरे बच्चो को माफ कर दे, यह गाँव छोड़ दे, तुझे पाँच बकरे दूँगी । (नीमो के पास जाकर) तू क्या बिल्कुल अधा हो गया है ? बात-बात पर छुरा निकाल लेता है ।

[सुहाली निःशब्द भाव से सिसककर आँसू पोंछती है]

नीमों : तुम हमेशा देवल की तरफदारी करती हो, माँ !

मातई : अरे ओरे नीमो ! तू अपने छोटे भाई को कभी प्यार भी करेगा ?

नीमों : (ऊँचे स्वर मे) मत कहो इसे मेरा छोटा भाई । यह मेरा दुश्मन है, दुश्मन ।

[नीमो देवल को घूरते हुए तेजी से झोपड़ी के अन्दर चला जाता है। सुहाली नीची नजर करके नीमो के पीछे-पीछे अन्दर जाती है]

मातई : (देवल से) क्यो रे लड़के ! कल रात तू कहाँ था ?

देवल · (अचकचाकर) माँ झूम पर बडा काम था। थककर वही अलाव के पास सो गया था।

मातई : (बिगड़कर) अरे ओरे झूठे ! अपनी माँ से झूठ बोलेगा तो सौ बिजलियाँ गिरेंगी तुझपर। ठीक-ठीक बतला कहाँ था ?

देवल : सच बता दूं, माँ ! तुम डाँटोगी तो नही ?

मातई : हाँ-हाँ, नही डाँटूंगी। बोल !

देवल . मै कल रात ··(अचानक बनावटी भय के साथ) तुम डाँटोगी, माँ !

मातई : (डांटकर) अरे ओरे शैतान की पसली ! अब बतलाएगा या नही ?

देवल · माँ, सफेद पहाडी वाले गाँव मे गया था।

मातई · क्यो रे, अपने गाँवके पोनुग मे तुझे नाचना-गाना बुरा लगता है क्या ?

देवल : मै इसलिए थोडे ही गया था, माँ ! वहाँ जो नदिया है न, उसी मे बड़े-बडे घडियाल बहकर किनारे आ लगे थे।

मातई : नही रे, पहले तो ऐसा कभी नही हुआ।

देवल : माँ, जो कभी नही हुआ, वही हो रहा है आजकल।

मातई फिर क्या हुआ ?

देवल : मैने और गोगो ने कई परिन्दे चुटकी बजाते मार डाले, फिर उन सब घड़ियालो को बाँस मे बाँधकर आस-पास के गाँवो मे घुमाया गया।

मातई . (खुश होकर) तब तो तेरा नाम खूब हुआ होगा।

देवल : बस यह समझो कि तुम्हारे देवल की धूम मच गई। फूल-मालाओ से मे ढँक-सा गया और फिर मै ऐठता हुआ घूमता रहा। यहाँ तक कि एक पत्थर से टकराकर धडाम से चारो खाने चित हो गया।

[माँ ठठाकर हँसते हुए झोपडी के अन्दर जाने लगती है, देवल भी हँसता है]

मातई · तेरे खाने के लिए मिथुना ले आऊँ ?

[देवल सहमति-सूचक सिर हिलाता है। मातई झोपडी के द्वार तक जाकर लौट आती है]

अरे ओरे ! कोई चोट तो नही आई ?

देवल (नकली गम्भीरता से) चोट ! हाँ माँ, बड़ी सख्त चोट आई है।

मातई (घबराकर) कहाँ रे ? कहाँ ?

देवल कहाँ ! अरे, उसी पत्थर को चोट आई, जिस पर मैं गिरा था।

मातई . (हँसते हुए) हट रे झूठे !

[मातई अन्दर चली जाती है। देवल हँसता रहता है। पुल पर से गोगो का प्रवेश। देवल उसे देखकर

मुँह पर उँगली रखकर चुप रहने का इशारा करता है। गोगो नीचे आता है। देवल उसकी ओर बढ़ता है]

देवल : (फुसफुसाकर) सब लोग अन्दर हैं।

गोगो : नीमों भी ?

[देवल सहमति-सूचक सिर हिलाता है]

काम हुआ ?

देवल : नही, गोगो !

गोगो : क्यो ?

देवल : दुश्मन की तादाद बहुत ज्यादा थी।

गोगो : तो हमला नही किया ?

देवल : नही। हम सब सुबह तक घर लौट आए।

गोगो : अच्छा किया। आज रात को एक दूसरी जगह शिकार खेलना है और इस बार मैं खुद तुम्हारे साथ चलूँगा।

देवल : तब तो बहुत अच्छा होगा।

गोगो : एक बात और। हमारा छापा कामयाब हुआ।

देवल : (खुश होकर) अच्छा !

गोगो : हाँ ! दस चीनियो का एक खोज-दस्ता सियाँग नदी के पुल पर बैठा खा-पी रहा था। अँधेरे में सरकते हुए हम सब उनके ठीक पीछे जा पहुँचे और सबको गोलियो से भून डाला। (इधर-उधर देखकर) तमाम हथियार और गोला-बारूद हमारे हाथ लगा है।

देवल . वह सब कहाँ है ?

गोगो : वही झरने के पीछे वाली खोह मे।

देवल : तो आज रात को·· ···

[देवल अचानक बात करना बन्द कर देता है। अन्दर से लोहे की कुदाल और बांस की टोकरियां लेकर नीमो और सुहाली का प्रवेश]

गोगो : (अचानक ऊँचे स्वर मे) और फिर हमने घडियालो की खाल उतारकर उन्हे झोपडी की छत पर फेक दिया।

[नीमो सीढी के पास पहुँचकर रुक जाता है]

नीमो : (मुडकर) क्या शिकार पर गए थे गोगो ?

गोगो : हाँ, नीमो !

नीमो : घड़ियाल के शिकार पर ?

गोगो : हाँ !

नीमों (हल्के व्यंग्य से) तब तो बहुत दूर जाना पड़ा होगा ?

गोगो बहुत दूर।

नीमों एक दिन मुझे भी ले चलो।

गोगो रात का शिकार बडा खतरनाक होता है, नीमो !

नीमों . तुम ठीक कहते हो, गोगो ! (देवल की ओर देखकर) रात का शिकार तो सिर्फ बहादुर ही कर सकते हैं।

[नीमो सीढ़ियो पर चढकर पुल पर आ जाता है, उसके पीछे-पीछे सुहाली है]

गोगो   क्या झूम पर जा रहे हो ?

नीमो : (व्यग्य से) हाँ, गोगो ! घड़ियालो के शिकार से पेट तो भरता नही।

दवल   (गोगो से) और पेट भरना वहुत जरूरी है, गोगो !

नीमो . (पुल पर से झुककर) और अगर किसी की जवान लम्बी हो जाए, तो उसे काट लेना भी जरूरी है, गोगो !

देवल · (गोगो से) पर उससे पेट तो भरेगा नही।

नीमों · (चीखकर) उससे दिल तो भरता है।

[नीमो तेजी से पुल के बाहर चला जाता है। उसके पीछे-पीछे सुहाली भी जाती है]

गोगो   नीमो को कुछ पता तो नही है ?

देवल   नही पर शक करता है।

गोगो · शक करता है ?

देवल   हाँ ! वह समझता है कि मै दूसरे गाँव की किसी लडकी के पास जाता हूँ।

[गोगो हौले से हँसता है, फिर सीढियो तक जाकर पुल के उस ओर देखता है, जिधर नीमो और सुहाली गए हैं]

गोगो   (लौटते हुए) चीनियो की हरकतो पर नजर रखने के लिए मैने हर ऊँची पहाडी पर अपने आदमी तैनात कर दिए है। इन सबके पास ढोल है। जैसे ही कोई टुकडी आगे वढेगी, वैसे ही वँधे-वँधाए इशारो से हमे सब खवरे मिल जाएँगी।

देवल . यह तरकीव वहुत अच्छी है ।

गोगो . ढोल वजाने वालो का यह जाल सारे इलाके मे फैला है और हमारा आखिरी आदमी तुम्हारी इस झोपडी के विल्कुल पास है ।

देवल कही गॉव के लोग ढोल की आवाजो का गलत मतलव न लगाएँ ।

गोगो . उसका इन्तजाम भी हो चुका है । मैने तमाम गॉवो मे यह अफवाह उड़ा दी है कि वीजू देवी का कोप फूटने वाला है और देवी को मनाने के लिए थोड़ी-थोडी देर मे ढोल वजेगे ।

देवल यह ठीक है ।

गोगो याद रखो, हमे अपनी खवरो के मुताविक दुश्मन को ज्यादा-से-ज्यादा नुकसान पहुँचाना है (कुछ रुककर) कल के हमले मे अपने दो साथी मारे गए । जानते हो क्यो ? क्योकि वे दुश्मन के होश मे आने से पहले भागे नही । (एक-एक शब्द पर जोर देकर) हमे फुर्ती और चालाकी से काम लेना है । दुश्मन आस-पास की जमीन के वारे मे हमसे ज्यादा नही जानता । हम अपनी धरती के चप्पे-चप्पे को पहचानते हैं । हमे मालूम है कहाँ हमला होना चाहिए और कहाँ छुपना , हमारी जानी-पहचानी मिट्टी मे अगर दुश्मन साँस भी ले, तो हमे मालूम हो जाना चाहिए ।

देवल (प्रशसाभरे स्वर मे) तमाम वार मैने सोचा है, गोगो, कि तुम्हे कितना कुछ मालूम है ।

गोगो . यह सब मैने नीचे मैदानो के उस ओर के देश मे सीखा था। तुम नही जानते, दूसरी जग मे बर्मा की लडाई मे हमारे गुरिल्ला दल ने बड़ी कामयाबी पाई थी।

देवल (न समझकर) दूसरी जग ?

गोगो · हॉ देवल, तुम शायद तब पैदा भी न हुए थे। दो बडे-बडे मुल्को की लड़ाई थी। एक मुल्क बहुत दूर से अपने फौजी लेकर हमला करने आया था। वह खूंखार लडाका था और बिजली की तेजी से पहाड, नदियॉ, दलदल, शहर, गॉव निगलता हुआ इधर की ओर बढने लगा।

देवल फिर क्या हुआ ?

गोगो हमारे इन पहाडो से जवान नीचे मैदानों मे बुलाए गए थे। हमे वह सब सिखाया गया था जो मैने तुम्हे और अपने साथियो को सिखाया है। फिर हमने बर्मा के जगलो मे, पहाड़ो पर, नदियो, मैदानो मे दुश्मन को चैन की साँस नही लेने दी।

देवल और फिर ?

गोगो और फिर दुश्मन अपना सब सामान छोड़कर पीछे भागा तो भागता ही गया और हम दूर की सरहदो तक उसका पीछा करते गए। (कुछ रुककर) लडाई खत्म होने के बाद मै फिर यहाँ लौट आया और केबग ने मुझे अपना सरदार चुन लिया।

देवल · तो तुम बहुत दूर तक घूमे हो ?

गोगो : बहुत दूर तक। नीचे एक बिल्कुल नई दुनिया है, देवल! नीचे वाले लोग बिजली चमकने पर डर से थरथराते नही और न हर जगह भूत-चुड़ैलो के होने की बात सोचते है।

[अन्दर से मातई का कुछ खाने-पीने का सामान लेकर प्रवेश]

आओ, मातई !

मातई : (सामान देवल को देते हुए) गोगो, मेरा एक काम कर दो।

गोगो : क्या काम है, मातई ?

मातई : बड़ी किरपा होगी तुम्हारी। किसी तरह इस गूंगी चुड़ैल से मेरे नीमो को बचा लो। सच्चे बाबा से कहकर नीमो की परछाई उतरवा दो, नहीं तो किसी दिन मार-काट हो जाएगी।

गोगो : (नकली गम्भीरता से) कह दूंगा, मातई, कह दूंगा।

[मातई सीढ़ियो की ओर बढती है]

और तुम जा कहाँ रही हो ?

मातई : शाँगली की झोंपड़ी तक।

देवल : क्यों, माँ ?

मातई : अरे तुझे गाँव की कोई खबर भी रहती है? शाँगली का बेटा शिकार से तमाम जानवरों की खाल लाया है।

[फिर जैसे मातई को कुछ याद आ जाता है—गोगो से]

गोगो, देवल कह रहा था कल तुम लोग शिकार पर गए थे ? एक घडियाल का चाम मुझे भी ला दो !

गोगो : दोनी पोलो ने चाहा तो हजारो घड़ियालो के चाम से तुम्हे लाद दूँगा ।

मातई : (खुश होकर) क्या सच कह रहे हो, गोगो ? लेकिन इतने दरिदे आएँगे कहाँ से ?

गोगो : (गम्भीरता से) वे आ रहे है ।

मातई : (साश्चर्य) आ रहे है ! (मुस्कराकर) क्यो ठिठोली करते हो ?

गोगो : बिल्कुल सही कह रहा हूँ, मातई ! शायद किसी दिन इस झोपडी तक भी आ पहुँचे ।

मातई : (बिगड़कर) अरे ओरे ! दरिंदे भी क्या आदमी है जो दो पैरो से चलकर यहाँ तक आ पहुँचेगे ?

गोगो : वे आदमी नही है, मातई !

मातई : यही तो मै भी कह रही हूँ ।

गोगो : और यही तो मै भी कह रहा हूँ । वे दरिदे हैं तभी तो इस झोपडी को, तमाम झोपडियो को, तमाम गाँवो को, तमाम पहाड़ो और नदियो को निगल सकते हैं ।

मातई : (साश्चर्य) अरे ओ ! मालूम देता है नीमो की बुरी परछाई उतरकर तुझ पर सवार हो गई है ।

देवल : क्यो, माँ ?

मातई : अरे देख तो रे ! गोगो कैसी बेसिर-पैर की बात

कर रहा है।

देवल : गोगो ठीक कह रहा है, माँ!

मातई : (साश्चर्य) अरे ओ! (आसमान की ओर देखकर) हे दोनी पोलो, अब मुझ पर सौ बिजलियाँ गिरा दो तुम। अरे क्या सब पर टोना-टोटका चढ गया है? (गोगो से) सच-सच बतला दो, तुम्हे क्या हो गया है?

गोगो : मातई, मेरी बात तो सुनो। असल मे तुम्हे मालूम नही। दोनी पोलो ने दो पैरों वाला एक नया दरिंदा पैदा किया है।

मातई : अरे ओरे! क्या यह सच है?

गोगो : हूँ। और इस दरिंदे के बडे-बडे जबडे है, पैने दाँत हैं, गुफाओ जैसी आँखे है।

देवल : और इतना लम्बा-चौडा पेट है कि अपने गाँव जैसे अनगिनत गाँव पहाड़ो और नदियो के साथ समा जाएँ।

मातई : (गम्भीरता से) यह तो भगवान दोनी पोलो नें बहुत बुरा किया। उन्होने ऐसा आदमखोर बनाया ही क्यो?

गोगो : इस बात का उन्हे भी अफसोस है, मातई!

मातई : तुझे कैसे मालूम?

गोगो : कल रात उन्होने मुझे सपना दिया है और कहा है·· कि मुझसे बडी भूल हो गई है। तुम लोग उस भूल को सँवार दो।

मातई . पर इतना वडा काँटेदार जानवर मरेगा कैसे ?

गोगो . दोनी पोलो ने हमे आग उलगने वाली एक लकडी दी है, मातई ! उसी से मरेगा वह ।

मातई : (आश्चर्य से) आग उगलने वाली लकड़ी ?

गोगो · हाँ मातई, और उसमे मौत के पख छुपे रहते है।

मातई : फिर ?

गोगो : जहाँ नीचेवाली कमानी को दबाया कि दन्न-फिस्स की आवाज के साथ वे जहरीले तीर सामने वाली चीज मे जा घुसते है ।

मातई और फिर क्या होता है, गोगो ?

गोगो : और फिर ! जिस चीज मे वे तीर पैठते है, उसे दोनी पोलो अपने पास बुला लेते है ।

मातई विलकुल जादुई चीज है । मुझे भी दिखलाओगे किसी दिन ?

गोगो : (देवल से) देवल ! जरा वह लकडी ले आओ !
[देवल झोपड़ी के अन्दर जाता है]

मातई : (साश्चर्य) अरे ओरे ! तो क्या वह मेरी झोपडी मे है ?

गोगो हाँ मातई ! देवल ने तुम्हे जान-बूझकर नही वताया होगा। दोनी पोलो ने मना किया है न ?
[देवल बन्दूक लेकर आता है। गोगो अपने हाथ मे लेकर मातई को उलट-पलटकर दिखाता है]
देखो, मातई, यही है वह लकडी 'और यह रही वह कमानी ।

[मातई कमानी छूती है जिसके दबाने से जहरीले पख निकलते है। मातई बन्दूक अपने हाथ मे लेकर गौर से देखती है, फिर गोगो को वापस कर देती है]

मातई . तो क्या····· तो क्या देवल भी इस लकडी की कमानी दवा लेता है ?

गोगो . वहुत अच्छी तरह।

मातई (गोगो से) यह तो वहुत अच्छा है। (देवल से) अरे ओरे देवल! तू नीमो पर क्यो नही दवा देता ? उसकी चुड़ैल दोनी पोलो के यहाँ चली जाएगी।

देवल मॉ! दोनी पोलो ने गोगो से कहा है कि खवरदार अपने भाइयो पर कमानी न दवाना, नही तो सौ बिजलियाँ गिरेगी।

मातई : (भयभीत स्वर मे) अरे ! (आसमान की ओर देखते हुए) ओ माफ करना, दोनी पोलो! तव तो उसे भूलकर नीमो पर न चलाना। पर उस दरिदे पर तो चलाएगा न ?

देवल · उसी के लिए तो है, माँ!

मातई : विलकुल ठीक। जिस दिन तू उसे मारेगा न, उस दिन मै तुझे कौडियो की माला और काकातुआ के पखो से सजाऊँगी और फिर सारे केवग मे जाकर ढिढोरा पीटूँगी कि मेरे बेटे ने खूँखार दरिदे को मार डाला।

[मातई आवेश मे देवल का सर चूमती है, फिर

मुस्कराते हुए पुल की ओर बढती है]

: औरसुनो, मातई, किसी को बाते बतलाना नही। दोनो पोलो नाराज हो सकते है।

· (दो बार कानो और ओठो पर उँगली रखकर फुसफुसाती है) किसी को नही बतलाऊँगी।

· शागली को भी नही।

. शागली को भी नही।

[गोगो देवल को बन्दूक वापस कर देता है। मातई धीरे-धीरे पुल से बाहर निकल जाती है]

अब बोलो। आज रात के बारे मे क्या कहना है ?

: आज की रात एक खास हमला करना है, देवल !

[गोगो अन्दर की जेब से एक नक्शा निकालता है। देवल गौर से देखता है]

(नक्शे पर एक जगह उँगली रखकर) यह देखो, इस जगह चीनियो ने अपना एक नया अड्डा बनाया है। यहाँ उसकी रसद और गोला-बारूद काफी तादाद मे जमा है।

. (नक्शा देखते हुए) यह तो सियाँग नदी के उस पार की घाटी है।

. हाँ, इस अड्डे की सब खबरे हमारे पास है। दुश्मन के कुछ अच्छे फौजी दस्ते दिन-रात इस जगह की हिफाजत करते है।

उनकी तादाद ?

काफी है।

देवल : हमला कैसे होगा ?

गोगो : अँधेरा होने के वाद हम सव उसी झरने के पीछे-वाली खोह मे मिलेगे और पहाडियो पर सरकते हुए सियाँग नदी तक पहुँच जाएँगे ।

देवल : फिर ?

गोगो : नदी पार करने से [हम सव दो दलो मे बँट-कर सियाँग के वर्फीले पानी मे पैठ जाएँगे । नदी के उस ओर पहुँचकर हम किनारे की घास मे दुवके रहेगे और मौका मिलते ही दुश्मन पर टूट पडेगे ।

[हवाओ का शोर उभरता है । वादलो की गडगडाहट सुनाई पडती है । गोगो और देवल आसमान की ओर देखते है]

आज की रात जितनी तूफानी हो, उतना ही अच्छा है, क्योकि काम वहुत खतरनाक है । चीनियो ने अपने अड्डे के चारो तरफ रोशनी फेकने वाले वडे-वडे काँच लगा रखे हैं और चप्पे-चप्पे पर उनके जासूसो का जाल फैला है ।

देवल : पर सियाँग तो हम आसानी से पार कर लेगे ।

गोगो : इतना आसान नही जितना तुम समझ रहे हो । हमारा दुश्मन वेहद चालाक है और हमारा चालाकी-भरा अचम्भा ही उसे मात दे सकता है ।

[अचानक पृष्ठभूमि मे दूर से ढोल वजने की आवाजें आती हैं, फिर एक ढोल विलकुल पास मे ही वजता है]

(चौंककर) मालूम देता है कोई खबर आई है। मैं अभी आता हूँ।

[ढोल बजता रहता है। गोगो तेजी से पुल के बाहर चला जाता है। हवाएँ तेज होती है। बादलो की गड-गड़ाहट बढती है। देवल उत्सुकता से पुल की ओर देखता है। दूसरे ही क्षण गोगो दौडता हुआ फिर आता है]

देवल क्या खबर है ?

गोगो दुश्मन का खोज-दस्ता झरने के पास देखा गया है।

देवल : तो फिर ?

गोगो : हिन्दुस्तानी फौज के खोज-दस्ते से उनकी मुठभेड हो गई। गोलियाँ चली है, कुछ चीनी घायल हुए है और बाकी भाग गए है।

देवल · तो लडाई बहुत तेजी से हमारे गाँव की तरफ आ रही है।

गोगो · एक खबर और है। आस-पास के इलाको मे कुछ अनजाने लोग घूमते देखे गए है।

देवल · (चौंककर) अनजाने लोग ?

गोगो · हाँ, और वे गाँव वालो से मेल-जोल बढा रहे है, उन्हे नमक और कम्बल देने का लालच दे रहे है।

देवल · इसका मतलब ?

गोगो : साफ है। दुश्मन एक नई चाल खेल रहा है और अपने जासूसो का जाल बिछा रहा है। बहुत होशियार रहने की जरूरत है।

[बिजली फिर चमकती है। तेज तूफानी हवाएँ चलती हैं]

देवल · (सशंकित स्वर मे) अगर घाटी वाली छावनी पर पहरा और कड़ा हो गया तो ?

गोगो . तो भी हमे हमला करने का खतरा शायद उठाना पडे। अच्छा, मै झरने वाले अड्डे पर जा रहा हूँ, सब लोग वही मिलेगे। झुटपुटा होते ही तुम भी आ जाना।

देवल · ठीक है।

[गोगो पुल की सीढियो की ओर बढता है। जैसे ही वह सीढियो पर चढता है वैसे ही बादल गरजते है और हवाएँ तेज होती हैं। गोगो पुल के उस ओर कुछ देख-कर अचानक ठिठककर खड़ा हो जाता हे और दबे पैरो देवल के पास लौट आता है]

गोगो उधर से कोई आ रहा हे, देवल !

देवल कोई अपना आदमी तो नही ?

गोगो नही, अपना आदमी नही है।

[गोगो अपने कपड़ो के अन्दर से छोटी-सी स्टेनगन निकालता है]

देवल : तो फिर शायद दुश्मन का कोई भेदिया हो।

गोगो . हो सकता है।

[इसी समय बिजली फिर चमकती है और पुल के एक कोने पर सिर से पैर तक काले कम्बल से ढँकी

एक आकृति दिखाई पडती है । गोगो देवल का हाथ पकडकर खींचता हुआ नाले के अन्दर छुप जाता है। आकृति सावधानी से पुल पार करके सीढियो तक आती है । क्षण-भर के सोच-विचार के पश्चात् आकृति सीढियो से नीचे उतरती है और दबे पैरो झोपडी की ओर बढती है। नाले से गोगो और देवल निकलते है। देवल के हाथ मे दुनाली है और गोगो अपनी स्टेनगन लिए है । आकृति पीछे की ओर मुडती है । गोगो और देवल को देखकर आकृति सीढियो की ओर भागती है । देवल उसके पीछे भागता है]

गोगो : (चीखकर) रुक जाओ यही !

[देवल उसे सीढियो को पार करने से पहले ही पकड लेता है और नीचे की ओर धक्का देता है। गोगो बराबर अपनी स्टेनगन उसकी ओर ताने है। देवल उसकी ओर बन्दूक किए रहता है]

(दमककर) कौन हो तुम ?

[आकृति खामोश रहती है , बिजली चमकती है]

सुना नही तुमने ? मै पूछता हूँ कौन हो तुम ? यहाँ क्या कर रहे थे ? (चीखकर) देवल !

[देवल सीढियो से लपककर आकृति के सिर पर बन्दूक के कुन्दे से आघात करता है। आकृति लड़खड़ाकर आगे की ओर गिरने लगती है । उसका काला कम्बल जमीन पर गिर जाता है । गोगो और देवल आश्चर्य

से एक-दूसरे की ओर देखते है क्योकि वह एक औरत है]

शीकाकाई : (अजीब-सी बर्फीली आवाज मे) मुझे भी मार डालो। तुम सब हत्यारे हो। खूनी हो (अचानक पागलो की तरह चीखकर) मार डालो मुझे !

[गोगो और देवल एक क्षण एक-दूसरे को देखते है]

गोगो : (डाँटकर) यह क्या बक रही हो ?

देवल : तुम हो कौन ?

शीकाकाई : (असमान की ओर घूरते हुए) एक जिन्दा लाश।

देवल . क्या मतलब ?

शीकाकाई (दाँत पीसकर) बेवकूफ ! अभी तक मतलब नही समझ पाया ? मै चलने-फिरने वाली जिन्दा लाश हूँ (अचानक भरे कण्ठ से) मेरी अपनी कोई चीज नही। देख ये हाथ, इनमे कोई हरकत नही। ये आँखे, इनमे कोई आँसू नही। ये ओठ, जो पत्थरों से भी ज्यादा बेजान है।

देवल : (गोगो से) यह औरत पागल जान पड़ती है।

शीकाकाई : (चीखकर) खामोश, मै पागल जान नही पड़ती हूँ (कुछ रुककर) पागल हूँ। समझे !

गोगो . देखो लडकी ! ये बेकार की बाते छोड़ो और साफ-साफ बताओ कि तुम कौन हो ?

देवल : कहाँ से आई हो ?

गोगो : तुम्हे किसने भेजा है ?

देवल . तुम्हारा नाम क्या है ?

गोगो . और तुम यहाँ क्या कर रही थी ?

शीकाकाई (गम्भीरता से) इन सब सवालो का जवाव कभी मेरे पास था, पर अब नही है। (भरे गले से) अब कुछ भी नहीं है। पहले कभी मेरा एक नाम था। पहले कभी मेरा एक गाँव था जहाँ मेरे लोग थे। एक मन्दिर था जहाँ मेरे भगवान थे। (भरे गले से) माँ थी, बाप था, नन्हे-नन्हे भाई-वहिन थे।

गोगो अब वे सब क्या नही हैं ?

शीकाकाई (चीखकर) इसलिए कि मौत का काला मुँह उन सबको निगल चुका है। (थकी-थकी आवाज) इसलिए कि फौजी बूटो के नीचे पिसकर हमारा तवाँग दम तोड चुका है।

गोगो (साश्चर्य) तवॉग !

शीकाकाई (आँसू पीते हुए) हाँ। हमारा प्यारा तवाँग।

[गोगो और देवल अपनी बन्दूकें नीची करते हैं]

गोगो . तो क्या तुम तवाँग से आ रही हो ?

देवल क्या तवाँग वरबाद कर दिया गया ?

शीकाकाई . हाँ · हमारा प्यारा तवॉग वरबाद कर दिया गया।

गोगो पर यह सब कैसे हुआ ?

शीकाकाई दो दिन और दो रात तक बराबर लडाई होती रही। दुश्मन कई वार पीछे हटा, फिर लाल चीटियो के झुण्ड की तरह दुश्मन की तादाद बढती गई। बचाने वालो को पीछे हटकर सामना करने को मजबूर होना पडा। सारा तवाँग खाली हो

गया। और फिर'' और फिर'''

गोगो : फिर क्या हुआ ?

शीकाकाई · फिर एक अँधेरी रात को वे सब मठ मे घुस आए।

गोगो : पर तुम लोग मठ मे क्या कर रहे थे ?

शीकाकाई . भगवान बुद्ध की पूजा।

गोगो · पर क्यो ? भागे क्यो नही तुम लोग ?

शीकाकाई . इसलिए कि वापू लामा ने भागने से इन्कार कर दिया था।

देवल . उन्होने ऐसा क्यो किया ?

शीकाकाई . भगवान बुद्ध की मूर्ति जो रह गई थी मठ मे। वापू लामा को रहना पड़ा। माँ रुक गई। मैं भी नही गई। छोटे भाई-वहिन भी रह गए (रोते हुए) नही-नही, कोई नही रह गया' अव इनमे से कोई नही रह गया।

गोगो . (नरमी से) अपने आँसू पी डालो, बेटी ! हाँ, तो फिर क्या हुआ ?

शीकाकाई : फिर क्या नही हुआ ! हम सव भगवान बुद्ध के सामने घुटनो पर झुके बैठे थे। हमारी आँखे बन्द थी। अचानक मठ के मजबूत दरवाजे तोड डाले गए। और जब हमने आँखे खोलकर देखा तो हथियारो से लैस चीनी हत्यारे सामने खडे थे।

देवल : (घबराकर) तो क्या'''तो क्या उन्होने वापू लामा की जान'''

शीकाकाई इतनी जल्दी उन्होने बापू लामा की जान नही ली। पहले उन्हे पकड़ा, कोड़ों से मारा, भारी बूटों से

कुचला और फिर···

गोगो . फिर क्या हुआ ?

शीकाकाई उन्होने मेरी माँ की गोद मे सहमे हुए छोटे भाई को छीन लिया और उसे हवा मे उछाल दिया · और · · (रोते हुए) और जब वह गिरने लगा तो नीचे नगी सगीने लगा दी। बापू लामा चुप थे। उनकी आँखो से एक आँसू तक न गिरा। माँ जैसे पत्थर हो गई थी। फिर उन्होने भगवान बुद्ध की मूर्ति को ठोकरो से तोड डाला। तब बापू लामा की आँखो से धार लग गई, उनकी चीखो से दूर तक की पहाडियाँ गूँजती रही।

देवल पर वे चाहते क्या थे ?

शीकाकाई यही सवाल बापू लामा चीनियो से पूछते रहे।

गोगो उन्होने क्या जवाब दिया ?

शीकाकाई उन्होने कहा, हमे खाने-पीने का सामान चाहिए, हमे भेड-बकरियाँ चाहिए।

देवल सामान मिला उन्हे ?

शीकाकाई (गर्वीली मुस्कान के साथ) नही, उन्हे सामान नही मिला। हमने सब-कुछ पहले ही छुपा दिया था। कुछ भी नही मिला उन्हे। और इसीलिए उनकी सुअर जैसी बनैली आँखे खून उगलती रही, उनकी चपटी नाको पर सूजन आती रही और उन्होने बापू लामा, माँ और छोटी बहिन को एक साथ खड़ा किया और फिर ·(गला रुँध जाता है) और फिर ··

[शीकाकाई थकी-सी सिर झुकाकर एक पत्थर पर बैठ जाती है और धीरे-धीरे सिसकती है। बादल गरजते है। शीकाकाई जैसे होश मे आ जाती है]

और फिर वे चले गए···मै रात के सन्नाटे मे दूर जाते हुए फौजी बूटो की आवाजे सुनती रही और फिर बेहोश हो गई। जब होश आया तो मैंने अपने-आप को फौलादी बाँहो मे जकडा पाया। दो दरिन्दे मुझे लिए जा रहे थे। तभी अचानक अँधेरे मे गोलियाँ चलने लगी। उन्होने मुझे छोड दिया·· और मेरे पैर मेरी जिन्दा लाश को यहाँ तक ले आए।

गोगो : बेटी! अपने कलेजे को और मजबूत बनाओ। जब रात आई है तो दिन भी आएगा।

देवल : (भावावेश मे) पर इस लड़की की जिन्दगी मे तो मनहूस रात छाकर रह गई है। गोगो, वहाँ कैसे उजाला होगा ?

गोगो : (दृढता से) हर जगह उजाला होगा, देवल, हर अँधेरा कोना जगमगाएगा। शर्त यह है कि हम अपने खून से दूसरो की जिन्दगी के चिराग जलाएँ। (शीकाकाई से) और जब नई रोशनी जगमगाएगी तो बिछुडो की याद दूर की घाटियो मे डूब जाएगी।

शीकाकाई : पर कब होगा यह सब ? कब ?

गोगो : कौन जाने! शायद हम वह दिन देखने के लिए जिंदा न रहे, पर इसका यह मतलब नही कि

हमारे खून से वह नया सूरज नही बनेगा। (कुछ रुककर) देवल, इस लडकी के लिए कुछ खाने का सामान लाओ!

[देवल शीकाकाई पर एक गहरी नजर डालकर तेजी से झोपडी के अन्दर चला जाता है]

बेटी! मुझे बापू लामा की जगह समझो।

[शीकाकाई एक बार गोगो की ओर सिर उठाकर देखती है, फिर दोनो हाथो से गालो को सटाए हुए बैठी रहती है। देवल अन्दर से कुछ खाने का सामान लेकर आता है। शीकाकाई धीरे-धीरे खाती रहती है। गोगो और देवल आगे बढ जाते है]

देवल : इस लडकी के बारे मे कुछ सोचा?

गोगो : (गम्भीरता से) हूँ! इसे हम अभी नीचे वाले गाँव मे भेज देगे।

देवल : क्यो?

गोगो : लड़ाई हमारे बहुत करीब आ रही है इसलिए। इस लडकी का यहाँ रहना ठीक नही।

देवल : (दृढता से) यह नही हो सकता, गोगो! हम इस लड़की को अकेला नही छोड सकते।

गोगो : हमे इसे छोड़ना होगा।

देवल : (तीखेपन से) मैने कहा न, यह नही हो सकता।

गोगो : (डाँटते हुए) देवल!

देवल : इसे हम अपने साथ रखेगे।

गोगो क्यो ?

देवल वह हथियार चलाना सीखेगी और फिर बदला लेगी (दाँत पीसकर) चार की जगह चार सौ चीनियो से।

गोगो क्या तुम इसे ·· ?

देवल · (बीच मे ही) हाँ गोगो! इसे हम अपने गुरिल्ला दल मे रखेगे।

गोगो : पर यह नही हो सकता।

देवल क्यो नही हो सकता ?

गोगो तुम आँसुओ से पिघल सकते हो, देवल, मै नही। कौन जाने, कौन हो यह लडकी।

देवल पर तुमने तो उसकी दर्दनाक कहानी सुनी है।

गोगो : मैने बहुत-सी कहानियाँ सुनी है, [खून, जग और बरबादी की।

देवल · तो क्या तुम्हे उसपर यकीन नही ?

गोगो : (गम्भीरता से) नही। किसी पर फौरन यकीन करना मेरे तजुर्बे ने मुझे नही सिखाया। मै मानता हूँ कि इस लडकी पर वही सब-कुछ बीता है जो इसने बतलाया है। मुझे हमदर्दी है, इससे ज्यादा कुछ भी नही।

देवल . (एक क्षण खामोश रहकर) तो मै भी इसके साथ जा रहा हूँ।

गोगो देवल!

देवल मै सचमुच जा रहा हूँ। मुझे इसकी हिफाजत

करनी है ।

गोगो : तुम पागल हो गए हो ?

देवल : (भावावेश मे) इस लडकी की बातो ने तुम्हे पागल नही किया, यही ताज्जुब है मुझे । मै जा रहा हूँ, गोगो ! मुझे कोई नही रोक सकता (पागलो की तरह चीखकर) तुम भी नही ।

[शीकाकाई उठकर खडी हो जाती है]

[गोगो बिजली की-सी तेजी से लपककर देवल के मुह पर तडातड तमाचे मारता है । देवल जैसे धीरे-धीरे होश मे आता है । शीकाकाई के दाहिने हाथ मे भुने हुए मास का टुकडा है, वह उठा ही रह जाता है और वह घबराई-सी इन लोगो की ओर देखती है । तभी बाहर से ढोल बजते हैं । गोगो देवल को छोडकर तेजी से पुल के बाहर जाता है । देवल शिथिल-सा एक पत्थर पर बैठ जाता है । ढोल धीमे पड़ते है ।]

शीकाकाई : (देवल के पास आकर) देवल ! मै भी लडूँगी तुम्हारे साथ ।

देवल : पर तुम्हे हथियार चलाना तो आता नही ।

शीकाकाई : आता है ।

देवल : (साश्चर्य) लडकी ?

शीकाकाई : (प्यार से) शीकाकाई कहो, देवल ! (वह अन्दर के कपड़ो से एक फौजी पिस्तौल निकालती है) यह देखो !

देवल : यह तुम्हे कहाँ मिली ?

शीकाकाई : एक मरे हुए खूनी की कमर मे से ।

देवल : शीकाकाई !

शीकाकाई : मै इसकी कमानी दवा लेती हूँ, देवल ! इन थोड़े-से दिनो ने मुझे वह सब-कुछ सिखा दिया है जो पहले मै सोच भी न सकती थी ।

[पृष्ठभूमि मे मशीनगन और तोपो की दबी-दबी-सी आवाजें आती है। ढोलो का बजना बन्द हो जाता है। गोगो का दौडते हुए पुल पर प्रवेश]

गोगो . (नीचे आकर) देवल · · ·! देवल·····सातवी चौकी पर चीनियो का जोरदार हमला हो रहा है । गाँव को फौरन खाली करने का हुक्म मिला है ।

शीकाकाई . मै भी तुम लोगो के साथ जा रही हूँ ।

गोगो . पर हम कही नही जा रहे है । हम यही पहाडियो पर रहेगे ।

शीकाकाई (दृढता से) तो मै भी यही रहूँगी ।

गोगो : देखो बेटी, बेकार की बातो का वक्त नही है । सारे गाँव मे हलचल मची है । गाँव खाली हो रहा है । औरतें और बच्चे नीचे मैदान की ओर भेजे जा रहे है । तुम भी उन्ही के साथ···

शीकाकाई · (बीच मे ही) पर मै कही नही जा रही हूँ ।

[गोगो देवल की ओर देखता है]

देवल शीकाकाई हथियार चलाना जानती है, गोगो!

शीकाकाई (प्रार्थना करते हुए) यह सच है। मुझे भी अपने साथ रख लीजिए। मुझे मरने-जीने का कोई खौफ नही। यकीन कीजिए मुझपर!

गोगो (गम्भीरता से सोचकर) अच्छी बात है। तो तुम्हे एक काम करना होगा!

शीकाकाई · बोलिए!

गोगो . तुम्हे चीनियो की अगली चौकी तक जाना होगा, और इस भेद का पता लगाना होगा कि उस छावनी मे कितनी रसद है, कितना गोला-बारूद है और कितने फौजी है?

शीकाकाई मुझे मजूर है।

देवल (चीखकर) पर मुझे मजूर नही। गोगो, अब मै तुम्हारा इरादा समझ रहा हूँ। तुम तुम शीकाकाई को मार डालना चाहते हो।

शीकाकाई . शीकाकाई इतनी आसानी से नही मरेगी, देवल! मै यह काम जरूर पूरा करूँगी। (गोगो से) वह जगह कहाँ है?

गोगो . चौथी पहाडी के नीचे वाली ढलान पर।

शीकाकाई कोई खास पहचान?

गोगो एक छोटा पहाडी नाला।

शीकाकाई मै जा रही हूँ।

गोगो · हम यही इन्तजार करेगे।

देवल . शीकाकाई!

शीकाकाई : मै जल्दी लौटूँगी, देवल, मै लौटूँगी'''।

[शीकाकाई अपना काला कम्बल शरीर पर लपेटकर तेजी से पुल के उस ओर चली जाती है]

गोगो : तुम्हारा कलेजा और मजबूत होना चाहिए, मेरे दोस्त ! फौरन जाओ और मातई को झुड के साथ ढलानो की तरफ भेज दो। मै जा रहा हूँ, झरने वाली खोह मे। मातई को भेजकर तुम वही मिलो।

देवल : मुझे माफ कर दो, गोगो !

गोगो : (मुस्कराकर) कोई बात नही।

[देवल तेजी से पुल के बाहर चला जाता है। गोगो क्षणभर देवल को जाता देखता रहता है, फिर वह भी तेजी से उसी ओर चला जाता है। तूफान और जोर से उभरता है। बिजली चमकती रहती है। मच पर फिर अन्धकार होने लगता है। दूर पृष्ठभूमि से मशीनगनो और तोपो की आवाज आती रहती है। मातई के कन्धो पर झुके, कराहते हुए वागचू का प्रवेश। उसके माथे से खून बह रहा है। उसके दाहिने पैर मे गोली लगी है, इसलिए वह चलने मे लडखडा रहा है। मातई धीरे-धीरे उसे पुल से नीचे की ओर लाती है। सावधानी से वह सीढियो से नीचे उतरकर घायल वागचू को पत्थर पर बैठाती है। फिर वह वांगचू को छोडकर झोपड़ी की ओर लपकती है। वागचू

कराहता हुआ खड़ा होने की कोशिश करता है और गिरने लगता है। मातई चीखकर दौडती है और इस बार उसे पत्थर के नीचे वाली जमीन पर पत्थर के सहारे बैठाती है]

मातई अरे ओरे ! अब उठा तो अच्छा न होगा। देखता नही तेरे माथे से खून वह रहा है। वस, चुपचाप बैठा रह। मैं अभी तेरे घावो के लिए बूटी का रस लाती हूँ।

[बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए मातई झोपड़ी के अन्दर जाती है और बाँस के कटोरे मे कुछ लाती है। इस बीच वागचू इधर-उधर देखता है और कराहता रहता है। दूर पृष्ठभूमि मे मशीनगनो और तोपों की हल्की आवाजें बराबर सुनाई देती रहती है। आसमान धीरे-धीरे साफ होने लगता है और सूरज की रोशनी निकल आती है। मातई वांगचू के सिर की ओर खड़ी हो जाती है और अपने आँचल से कपडा फाड़कर वागचू का माथा पोछती है और वहाँ कुछ लेप लगाकर कपड़ा बाँध देती है]

मातई : (बुदबुदाते हुए) बूटी का रस तुझे फायदा करेगा। (अचानक चीखकर) ओ मेरे दोनी पोलो ! अरे तू कैसा है रे ? तेरे पैर मे भी तो घाव है और तूने मुझे वताया भी नही ?

[मातई घाव छूती है—वांगचू बहुत जोर से कराहता है]

वांगचू : आह·· आह · मत छुओ, वहाँ वारूद का टुकडा घुसा है · आह··

मातई : अरे ओ ! यह तो दिखाई दे रहा है ··(घाव देख-कर) यह रहा !

वांगचू : (गिड़गिड़ाते हुए) मुझे वचा लो, बूढी माँ · मुझे वचा लो ! · मै तुम्हारा अहसान जिन्दगी-भर नही भूलूँगा।

मातई : (परेशानी से) अरे ओरे ! मै तो खुद यही चाहती हूँ। (कुछ सोचकर) तेरे पास छुरी है ?

[वांगचू कमर के पीछे से छुरा निकालकर काँपते हाथो से देता है]

मातई : (छुरा लेकर) इसे आग मे बुझाया था ?

[वागचू सहमति-सूचक सिर हिलाता है]

अच्छा, अव तू अपना मुँह उधर कर ले।

[वांगचू मातई की आज्ञा का पालन करता है। मातई जख्मी टाग को कसकर पकड लेती है, फिर छुरे की नोक टाँग मे घुसेड़ देती है। वागचू के गले से दर्दनाक चीख निकलती है। कुछ क्षणो तक वागचू वरावर जोर-जोर से कराहता है ; फिर उसकी कराहट धीरे-धीरे वन्द हो जाती है। ऐसा लगता है कि उसे अचानक आराम मिल रहा है। मातई घाव से एक छोटा-सा छर्रा निकालकर वागचू को दिखाती है]

यह देख ! निकल गया।

[वांगचू देखकर सिर हिलाता है। मातई घाव पर

बूटी का रस डालती जाती है और अपने कपड़े फाड़-फाडकर पट्टियाँ बाँधती जाती हैं]

मातई   बस, अब तुझे बिलकुल आराम मिल जाएगा।
[मातई छर्रा पुल की तरफ फेंक देती है]
पर यह तुझे लगा कैसे ?

वांगचू   तुम्हे नही मालूम, लड़ाई हो रही है ?

मातई   लडाई हो रही है ! क्यो ?

वांगचू   (क्षण-भर खामोश रहता है) इसलिए कि पहाड के बाशिन्दो को और तमाम लोगो को आराम से रहने का मौका मिले।

मातई   पर हमे तो कोई तकलीफ नही ?

वांगचू   तुम बहुत भोली हो, बूढी माँ !

मातई   यही मेरा देवल मुझसे कहा करता है।

वांगचू   देवल ?

मातई   हॉ, वह मेरा बेटा है। अगर तुम्हारे कपडे पहन ले तो बिलकुल तुम्हारे जैसा ही दिखाई देगा। (कुछ रुककर) तुम्हे भूख तो नही लग रही है ?

वांगचू   प्यास लगी है।

मातई   मै अभी लाती हूँ।
[मातई पुन: झोपडी के अन्दर तेजी से जाती है। वागचू उठने की कोशिश करता है। मातई जब लौटती है तो वह कराहते हुए खडा होने की कोशिश कर रहा है]
अरे ओरे ! तू फिर भागने की फिराक मे है ?
[वागचू बांस का पात्र लेकर और एक ही साँस

मे पीकर वह पात्र वापस कर देता है]

वांगचू : मुझे जाना चाहिए, बूढी माँ !

मातई : पर कहाँ जाएगा तू ?

वांगचू : अपने लोगो मे।

मातई : तो क्या मुझे तू अपना नही समझता ?

वांगचू : यह बात नही है, माँ !

मातई : अच्छा यह बतला, यह जो गाँव मे नए-नए आदमी दिखलाई पड़ रहे है, कौन है ?

वांगचू : मुझे नही मालूम।

मातई और तेरा देश कहाँ है ?

वांगचू : पहाडियो के उस पार।

मातई : जहाँ लाल सूरज डूबता है ?

वांगचू : नही, जहाँ लाल सूरज उगता है।

मातई : तू तो बहुत दूर रहता है रे ! यहाँ क्यो आया है ?

[वांगचू चुप रहता है]

समझी, तू शिकार खेलने आया है। है न यही बात ? मेरा देवल भी बड़ा शिकारी है। गोगो के साथ उसने कई घडियाल मारे है। उसके पास आग उगलने वाली एक ऐसी लकडी है जिससे मौत के पख निकलते है।

[वागचू गौर से मातई को देखता है]

वांगचू : कहाँ है देवल ?

मातई : अभी तो यही था।

वांगचू : वह वहुत अच्छा शिकारी है ?

मातई . अरे मैं तो तग हूँ उससे, रात-दिन शिकार के पीछे दीवाना रहता है।

वांगचू रात मे भी शिकार करने जाता है ?

मातई . अरे यही तो रोना है। नीमो से इसीलिए उसकी लड़ाई रहती है।

वांगचू · नीमो ?

मातई मेरा वडा बेटा।

वांगचू . अच्छा, वह भी।

मातई : नही रे, वह तो वस भूम पर चावल पैदा करता है और उस चुडैल को गले से बाँधे घूमा करता है।

वांगचू · चुडैल !

मातई . ओह हो ! जव से वह मुई गूंगी आई है तव से नीमो तो जैसे पागल ही हो गया है। मेरी तो सुनता ही नही।

वांगचू (अनसुनी करके) मैं जा रहा हूँ, बूढी माँ !

[वागचू पुल की सीढ़ियो की ओर लड़खड़ाते हुए बढता है]

मातई और तू इस देश मे रहेगा कव तक ?

वांगचू वहुत दिनो तक।

मातई · क्यो रे, तुझे अपने घर-गाँव की याद नही सताएगी ?

वांगचू : हम दूसरो के घर-गाँवो को अपना वनाकर सव

भूल जाते हैं, बूढ़ी माँ !

मातई : दूसरों के घर-गाँवो को ?

वांगचू : (कुटिलता से) हाँ, हम हर आदमी को अपना दोस्त और हर घर को अपना घर समझते है।

मातई : यह तो बहुत अच्छा करते हो, बेटा! बहुत अच्छा करते हो।

[वांगचू हौले से हँसता है]

वांगचू : हमारा हर काम अच्छा होता है, बूढी माँ! और इसीलिए तो हमारे देश मे कोई भूखा नही, कोई नगा नही, कोई बीमार नही, कोई बेकार नही।

मातई : (साश्चर्य) अरे ओरे! तब तो तेरा देश दोनी-पोलो के घर की तरह है। कैसे कर पाते हो यह सब ?

वांगचू : (गम्भीरता से) गोली मारकर।

मातई : क्या मतलब ?

वांगचू : नगे, भूखे, बेकारो को हम जान से मार देते है।

मातई : पर···पर···यह यह तो तुम लोग अच्छा नही करते हो।

वांगचू : बूढी माँ, तुम बड़ी भोली हो। तुम नही जानती, हर पहेली का हल बन्दूक की गोली मे छुपा है।

मातई : अरे ओरे! तब तो तेरे देश मे सब हत्यारे बसते है।

वांगचू : (डाँटकर) खामोश! (गर्व से दाहिने हाथ की एक उँगली ऊँची करता है) मेरा देश और मेरे लोग सबसे ऊँचे है। वे एक दिन सब देशों के और सब

लोगो के सरताज बनेगे।

मातई तब तो मेरी झोंपडी और मेरे बेटों पर भी तेरा राजा हुकुम चलाएगा ?

वांगचू जरूर।

मातई और अगर हम तेरे राजा का हुकुम न माने, तो ?

वांगच (मुस्कराकर) तो तो हम तुम सबको गोलियो से उडा देगे।

मातई (घबराकर) ओ मेरे दोनी पोलो !

वांगच (मुस्कराकर) पर ऐसा कभी नही होगा। मेरा राजा तुम्हे रोटी और मक्खन देगा, आराम और चैन देगा।

मातई अरे ओरे ! यह सब तो हमारे पास पहले ही है, तेरा राजा हमे क्या देगा ?

वांगच अगर मैं कहता हूँ कि तुम्हारे पास कुछ नही है तो इसका मतलब है कि तुम्हारे पास कुछ नही है; अगर मै कहता हूँ कि तुम्हे सब-कुछ मिलेगा तो इसका मतलब है कि तुम्हे सब-कुछ मिलेगा।

मातई अच्छा यह बतला, सूरज निकला है या नही ?

वांगच दिखाई नही देता, सूरज निकला है और धूप चमक रही है।

मातई और अगर तू कह दे कि अँधियारी काली रात है तो क्या हमे मानना पडेगा ?

वांगचू (चीखकर) बूढी माँ !

[मातई पागल की तरह हँसती है]

मातई : (हँसते हुए) कैसा है तेरा देश और कैसे हैं तेरे देश के लोग ?

[देवल का तेजी से पुल पर प्रवेश। वह बन्दूक की नली वागचू की ओर किए है]

देवल : (गरजकर) मैं बतलाता हूँ, माँ !

[देवल बिजली की-सी तेजी से सीढ़ियों से उतरकर आता है। वागचू मातई के पीछे छुपता है]

मातई : देवल ! यह क्या ? यह आग उगलने वाली लकड़ी उधर कर !

देवल : (दाँत पीसकर) यह नहीं हो सकता, माँ ! जानती भी हो यह कौन है ?

मातई : मैं सब जानती हूँ।

देवल : तुम कुछ नहीं जानती, माँ ! यह हमारे देश पर अपना कब्जा करना चाहता है। यह खूनी है, हत्यारा है !

मातई : (दृढ़ता से) यह कोई भी हो पर हमारा मेहमान है। मैं कहती हूँ हजारों बिजलियाँ गिरेंगी तुझ-पर। हटा इसे दूर !

देवल : समझने की कोशिश करो, माँ !

मातई : सुना नहीं तूने ? मैं कहती हूँ यह आग उगलने वाली लकड़ी उधर कर !

देवल : यह नहीं हो सकता, माँ !

मातई : (दोनों हाथ फैलाकर) तो ले, चला गुजार अपने जहरीले पग। जब मैं दोनों पोतों के घर नन्ही

जाऊँ तो फिर जो जी मे आए करना।

देवल (दृढ़ता से) मेरे सामने से हट जाओ, माँ! कही ऐसा न हो कि कमानी दब जाए। (अचानक चीख-कर) हट जाओ मेरे सामने से!

मातई अगर तेरी यही तबीयत है तो दबा दे कमानी, चला अपने पख, पहले अपनी माँ को मार डाल, फिर मेहमान पर हाथ उठाना।

देवल (साश्चर्य) माँ!

मातई (आवेश मे काँपती आवाज से) तू कहता न था कि भाइयो पर कमानी दबाने के लिए दोनो पोलो ने मना किया है?

देवल (चीखकर) पर वह हमारा भाई नही है, दुश्मन है। हमारी जमीन, हमारी झोपडी, हमारी नदियाँ और हमारे पहाड—इन सबका दुश्मन है।

मातई वह चाहे सारी दुनिया का दुश्मन हो, पर मेरा नही है। (भरे कण्ठ से) उसने मुझे माँ कहा है।

[देवल परेशान-सा सिर झुकाता है। मातई लपककर देवल के हाथो से बन्दूक छीन लेती है और फिर उसे देवल पर तान देती है]

देवल (साश्चर्य) माँ!

मातई अगर तूने एक कदम भी आगे बढाया तो समझ ले, मै कमानी दबा दूँगी। (भरे गले से) मैं······ मै ·· ··तेरा खून कर दूँगी!

देवल तुम पागल हो गई हो, माँ!

[मातई देवल के सवाल का कोई जवाब नही देती वागचू की ओर मुडकर]

मातई . अरे ओ अकल के दुश्मन ! अब खडा-खडा मुँह क्या ताक रहा है ? चल, भाग यहाँ से !

[वांगचू सिर झुकाकर लँगडाते हुए पुल की सीढियो की ओर बढता है। जब वह देवल के पास से गुजरता है तो देवल उसकी ओर देखकर जमीन पर थूकता है। वागचू सीढियो पर चढकर पुल के उस ओर निकल जाता है]

(देवल की बन्दूक वापस करते हुए) अरे ओरे, अब इस तरह मुझे घूर क्या रहा है ?

देवल : यह तुमने अच्छा नही किया, माँ ! जानती भी हो वह कौन था ?

मातई : हाड-मास का बना हुआ आदमी। तेरे और नीमो जैसा।

देवल : वह हाड-मास का नही, झूठ, दगा और फरेब से बना हुआ है। उसने और उसके तमाम साथियो ने हमारे देश पर हमला किया है। उनके पास आग उगलने वाली लकडियाँ है जिनसे मौत और बरबादी के पख निकलते है।

मातई . प्यार की दीवार से टकराकर मौत के पख बेकार हो जाएँगे, समझा !

[झोपडी की ओर बढती है। अचानक पृष्ठभूमि से स्त्रियो और पुरुषो का मिश्रित कोलाहल उभरता है]

मातई	यह कैसा शोर है ?
देवल	: गॉव खाली हो रहा है।
मातई	गॉव खाली हो रहा है ? क्यो ?
देवल	अव यहाँ रहना खतरनाक हो गया है। चलो माँ, अपनी चीजे बटोर लो जल्दी से। इसी झुण्ड के साथ तुम्हे भी मैदान की तरफ जाना है।
मातई	(शकित स्वर मे) क्यो ?
देवल	इसलिए कि हमारे गॉव पर जग के बादल मँडरा रहे है। चलो मॉ !
मातई	पर मै अपनी झोपडी छोडकर कही नही जा रही हूँ।
देवल	अव मै तुम्हारी कोई वात नही मानूँगा।
मातई	क्या मतलव ?
देवल	. मै तुम्हे जवरदस्ती झोपडी के और इस गाँव के वाहर ले जाऊँगा।
मातई	(क्रोधित स्वर मे) अगर तुझे अपनी जान प्यारी है तो खुद क्यो नही भाग जाता ? मातई इस झोपडी मे व्याहकर आई थी, तव इसकी हालत क्या थी ! एक-एक तिनका जोडकर तेरे वाप ने इसे वनाया था।
	(भरे कंठ से) दोनो पोलो ने अपने पास वुला लिया और अव तू मुझे उसकी आखिरी निशानी से भी दूर करना चाहता है ? कान खोलकर सुन ले, इस झोपडी से अलग होने की सिर्फ एक शर्त है

और वह यह कि यहाँ से मेरी लाश निकले !

देवल　　　तुम कुछ भी कहो, माँ...पर मैं तुम्हे यहाँ नही रहने दे सकता।

[देवल मातई का हाथ पकड़कर पुल की ओर खीचता है। मातई क्रोध में चिल्लाती है]

मातई　　. छोड़ दे' 'मुझे' छोड दे !

[पुल पर से नीमो और सुहाली का प्रवेश। सुहाली की पीठ पर एक बहुत बडी टोकरी बँधी है]

नीमों　　: (पुल से चिल्लाकर) देवल ! यह क्या वदतमीजी है ? छोड दे माँ को !

मातई　　. मुझे वचाओ...नीमो......मेरे बेटे' 'मुझे वचा लो !

[नीमो और सुहाली नीचे उतरकर आते है। देवल माँ को छोड़ देता है। सुहाली सहानुभूति से मातई के दवे हुए हाथ दबाती है]

नीमो　　: (मातई से) क्या बात है, माँ ?

मातई　　अरे यह नासपीटा मुझे मैदानो की ओर भेज रहा है।

नीमो　　. क्यो ?

देवल　　. इसलिए कि वहुत जल्दी लडाई शुरू होने वाली है। चारो तरफ खूनी और लुटेरे घूम रहे है।

नीमों　　: क्या सपना तो नही देखता है तू ?

देवल : यह सच है, वडे भइया, यह सच है !

नीमो : मुझे तो कोई खूनी-लुटेरा नही दिखा। हाँ, कुछ अजीव आवाजे जरूर सुनाई दी।

देवल · वे आवाजे लड़ाई के गोलो की है।

नीमो . और कुछ नए आदमी दिखाई दिए

देवल · वे ही हत्यारे हैं जो हमे हडपना चाहते है।

नीमो (ठठाकर हँसता है) वे हत्यारे हैं ? अरे मूरख, वे तो वहुत अच्छे आदमी है।

देवल : वडे भइया·· !

नीमो · तेरी अकल पर तो पाला पड गया है। (मातई स) माँ, उन्होने हमे वहुत-सी चीजे दी हैं।

देवल चीजे दी है ?

नीमो दिखाता हूँ, पर दूंगा नही।

[नीमो सुहाली को इशारा करता है। सुहाली पीठ के पीछे वँधी टोकरी से कम्वल और दो नमक की पोटलियाँ निकालती है। नीमो एक हाथ मे कम्वल और दूसरे मे पोटलियाँ ले लेता है और देवल को दिखाता है]

(मुस्कराकर) देखा तुमने ? कितने प्यारे हत्यारे हैं !

देवल वडे भइया ! ·· यह क्या किया तुमने ?

नीमो . क्या किया ? अरे, उन्होने मुफ्त मे चीजे दी, हमने ली।

मातई . मुफ्त मे ! क्या तुमने इन चीजो को ऐसे ही ले लिया ?

नीमो . हाँ, माँ, विना माँगे और विना पसीने की एक भी बूँद वहाए ।

मातई · तो जा और इन चीजो को सातवीं पहाडी की चोटी से नीचे फेंक दे !

नीमो . माँ !

मातई जिन चीजो को पाने के लिए पसीना न वहे, उन्हे अपने पास रखने से ज्यादा अच्छा है पहाडियो से नीचे कूदकर जान दे देना ।

नीमो : क्या कह रही हो, माँ ?

देवल . माँ ठीक कह रही है, वडे भइया ! उन्होंने इन चीजो को चारो ओर फेका है, हमे अपने जाल मे फँसाने के लिए ।

नीमो यह झूठ है !

देवल यह सच है ! उन्होने इन चीजो से तुम्हे खरीदने की कोशिश की है ।

नीमों (तैश मे) देवल ! अगर ऐसी-वैसी वात करेगा तो जवान काट लूंगा तेरी !

देवल . काटना है तो अपने हाथो को काटो, जिन हाथो से तुमने ये चीजे ली है ।

नीमो . (क्रोध से) देवल ··!

देवल (अकडकर) वडे भइया ·····!

[दोनो एक-दूसरे को घूरते है । मातई दौडकर दोनो

के बीच मे आकर खडी हो जाती है]

नीमो (छुरा निकालकर) माँ, तू हट जा सामने से !

मातई नीमो !

नीमो (दाँत पीसकर) मैं तुझे जान से मार डालूँगा !

देवल यही है उस दरिंदे की आवाज जो तुम्हारे मुँह से निकल रही है।

मातई : देवल !

नीमो नीच कमीने !

[आगे बढने की कोशिश करता है। मातई बीच मे अड जाती है। नीमो मातई का हाथ पकडकर एक ओर झटका देता है। फिर वह धीरे-धीरे छुरा ताने हुए देवल की तरफ बढ़ता है]

देवल (अपनी बन्दूक नीमो की ओर तानकर) वही रुक जाओ, वडे भइया ! तुम अभी इस आग उगलने वाली चीज को नही पहचानते। (चीखकर) वडे भइया !

[तभी पुल पर अचानक गोगो का प्रवेश]

गोगो (पुल पर से चीखकर) देवल !

[देवल और नीमो ऊपर देखते है। गोगो तेजी से पुल से नीचे उतरकर आता है]

(गरजकर) शर्म नही आती तुम लोगो को ? एक-दूसरे के खून के प्यासे बने खडे हो ?

नीमों : तुम्हे हमारे झगडे मे पड़ने का कोई हक नही।

गोगो : (चीखकर) हक है। जानते भी हो, इस झोंपड़ी के बाहर क्या हो रहा है? दुश्मन की फौजे तेजी से करीव आ रही है। सारा गॉव खाली हो चुका है। जल्दी करो, ऐसा न हो कि वहुत देर हो जाए! मातई और सुहाली को लेकर तुम फौरन मैदान की तरफ चले जाओ!

मातई : (आगे वढ़कर) गोगो, मैं अपनी झोपड़ी छोड़कर कही नही जा रही हूँ।

गोगो : यह मेरा हुक्म है, मातई!

मातई : मै इसे मानने से इनकार करती हूँ।

[मातई झोपड़ी की ओर वढ़ती है]

गोगो : मातई!

देवल : मॉ!

[मातई अनसुनी करके झोपडी के अन्दर चली जाती है]

(नीमो से) वडे भइया, तुम मॉ को समझाओ। हमे अपने गॉव से फौरन दूर चला जाना चाहिए।

नीमों : न मॉ जाएगी, न नीमो जाएगा, न सुहाली जाएगी। वे तुम्हारे दुश्मन होगे, हमारे तो दोस्त हैं।

गोगो : (बेबसी से) तुम मेरे साथ चलो, देवल!

[देवल और गोगो निराशा से सीढ़ियों की ओर बढ़ते हैं। तभी वांगचू का तेजी से प्रवेश। उसके साथ एक और चीनी है। वांगचू के हाथ मे एक बडा-सा

पिस्तौल है। दूसरा चीनी टॉमीगन लिए है]

वांगचू (पुल पर से चीखकर) खबरदार! अपने हाथ ऊपर करो!

[चौंककर देवल और गोगो अपनी-अपनी बन्दूको को पुल की ओर तानने की कोशिश करते है]

(चीखकर) अपने हथियार जमीन पर फेक दो!

[गोगो और देवल बेबसी से हथियार नीचे गिरा देते है। वागचू फुंगशी को चीनी भाषा मे जल्दी-जल्दी कुछ आदेश देता है। फुंगशी दौडता हुआ सीढियो से उतरकर नीचे आता है। फुंगशी गोगो और देवल के हथियार नाले की ओर फेंक देता है; फिर उनकी तलाशी लेता है। फुंगशी चीनी भाषा मे वागचू से कुछ कहता है। वागचू लड-खडाते हुए सीढियो से नीचे उतरता है। गोगो और देवल उसे घूरते है। नीमो सुहाली से फुसफुसाकर कुछ कहता है]

तो तुम भी उन लोगो मे से हो जो हमारी फौजो को दिन-रात परेशान किए रहते है।

[देवल कोई जवाब नही देता। गोगो भी खामोश है। फुंगशी देवल व नीमो की ओर बराकर अपनी टॉमीगन किए है। वांगचू गौर से नीमो और सुहाली को घूरता है]

नीमों (चापलूसी-भरे स्वर मे) मेरा कोई कसूर नही है, चीनी राजा! हम तुम्हारे दोस्त है। यह देखो!

[नीमो कम्वल और नमक की पोटलियाँ दिखाता है। वांगचू फुँगशी से चीनी भाषा मे कुछ पूछता है। फुँगशी उत्तर देकर मुस्कराता है। वागचू मुस्कराते हुए नीमो की पीठ ठोकता है ; फिर वह गोगो और नीमो की ओर मुडता है]

वांगचू : (मीठे स्वर मे) जोश मे आकर अक्सर भूले हो जाती है। पर भूले ठीक करने के रास्ते कभी वद नही होते, मेरे दोस्त !

देवल : यह वात तो तुम्हे सोचनी चाहिए।

वांगचू : (तिलमिलाकर) खामोश ! हमने दोस्ती का हाथ वढाया है और तुम उसे पीछे धकेल रहे हो ?

गोगो खूनी हाथो से अच्छे हाथ कभी नही मिला करते।

[वागचू चीखकर फुँगशी को चीनी भाषा मे कुछ आदेश देता है। फुँगशी लपककर गोगो के मुँह पर तमाचे मारता है। गोगो दृढ खडा रहता है]

गोगो हमारे गाल उतने नरम नही है जितने तुमने समझे है।

वांगचू . (मुस्कराकर) और हम भी अभी उतनी सख्ती से पेश नही आए है जितना तुम समझ रहे हो। (देवल की ओर मुडकर) देखो, मेरे दोस्त, अभी कुछ नही बिगडा है। मुझे सव-कुछ वता दो। तुम्हारे साथ कितने साथी है ?

देवल : जितने आसमान मे तारे है।

वांगचू : यह मजाक का वक्त नही है, मेरे दोस्त !

देवल यह सच है।

वागचू और गोला-बारूद कहाँ है ?

देवल . (देवल और गोगो एक-दूसरे को देखते है) हमारे दिलो की हर धड़कन मे, खून के हर कतरे मे।

वागचू और तुम्हारा सरदार कौन है ?

[देवल खामोश रहता है]

[वागचू पूरे गले से चीखकर फुंगशी को चीनी भाषा मे आदेश देता है। फुंगशी आगे बढ़कर अपने बूटो से देवल की टॉगो पर आघात करता है। देवल बेदम होकर जमीन पर गिर पडता है। गोगो पहले की तरह अडिग खड़ा रहता है। नीमो और सुहाली सहमे-सहमे-से यह सब देखते है]

[अन्दर से मातई का तेजी से प्रवेश]

मातई (देवल को जमीन पर देखकर, घबराहट मे) ओ मेरे दोनी पोलो ! यह क्या ? (वागचू से) तू फिर लौट आया है रे ?

[मातई आगे बढती है, वागचू रास्ता रोक लेता है]

वागचू ठहरो बूढी तुम्हारा बेटा लुटेरो के दल मे काम करता है।

मातई . क्या बकता है ! मेरा देवल ऐसा नही है।

नीमो : चीनी राजा सच कहता है, माँ !

वांगचू . वह रात के अँधेरे मे हमारी फौजो पर हमला

करता है, खून करता है, डाके डालता है।

मातई . देवल, क्या यह सच है ?

देवल : (खड़ा होकर मुँह से खून पोछते हुए) हाँ, माँ, यह सच है। मैने खूनियो का खून किया, डाकुओ पर डाके डाले है।

[मातई लपककर देवल के एक थप्पड मारती है]

मातई : (क्रोधित स्वर मे) बदजात कमीने! तूने मुझे पहले क्यो नही बताया ? अब समझी कि रातो मे शिकार के बहाने तू क्या करता था। तू अपनी माँ से झूठ बोला। सौ बिजलियाँ गिरेंगी तुझपर। (वांगचू की ओर मुडकर) और अब तू क्या चाहता है ?

वांगचू . सवाल मेरे चाहने का नही, तुम्हारे चाहने का है।

मातई क्या मतलब ?

वांगचू : (मीठे स्वर मे) हम यह जानना चाहते हैं कि इनका सरदार कौन है ? दल मे कितने लोग है ? गोला-बारूद कहाँ रखा है ?

मातई और अगर यह बताने से इनकार कर दे ?

वांगचू . तो हम इसे गोली मारना चाहेगे।

मातई · (दृढता से) तो फिर चला इसपर गोली। इसकी तरफ से मै कहती हूँ, यह कुछ नही बताएगा, (चीखकर) कुछ नही बताएगा।

वांगचू मै इसका मुंह खोलूंगा चाहे मुझे तुम्हारा मुंह बन्द करना पडे ।

[वागचू मातई को पकडकर खींच लेता है। गोगो, देवल आगे बढने की कोशिश करते है। फुंगशी उन दोनो को टॉमीगन दिखाता है। नीमो को आगे बढने से सुहाली रोक लेती है। वांगचू मातई के सिर मे पिस्तौल की मूँठ का आघात करता है। मातई एक हल्की चीख के साथ नीचे गिर पडती है]

देवल (कराहकर) माँ !

नीमो माँ !

[नीमो, गोगो, सुहाली, मातई को बेबसी से देखते है, वागचू हँसता है। मातई धीरे-धीरे उठकर खडी होती है। उसके माथे से खून बह रहा है]

मातई (वागचू से तिलमिलाहट और दु खभरे स्वर मे) मुझे भी मार डाल। पापी, नीच ! भूल गया वह घडी जब तू घायल था ? तेरे पैरो मे गोली लगी थी। तू मर रहा था। मैने तेरे घावो पर शहद लगाया। तुझे प्यार से गले लगाया, तुझे बेटा कहा। और तू हमे यह बदला दे रहा है ? प्यार के बदले मे खून ? मुहब्बत के बदले मे गोली ? (चीखकर) यही तेरे देश का रिवाज है रे ?

[वागचू अपने पिस्तौल की मूँठ वाला हाथ धीरे-धीरे फिर उठाता है]

नीमों : ठहरो, चीनी राजा ! माँ को मत मारो। वह बेकसूर है। मैं बताता हूँ तुम्हे कि सरदार कौन है।

[सब लोग नीमो की ओर देखते है]

(देवल की तरफ इशारा करके) वह है।

गोगो : (चीखकर) यह झूठ है ! सरदार मै हूँ।

देवल (वागचू से) यह आदमी झूठ बोलता है। सरदार मै हूँ।

वांगचू : (हँसकर) ऐसे नही मानोगे तुम लोग। शायद इस बुढिया को अपनी जान से हाथ धोना पडेगा।

[वह फिर अपना हाथ ऊँचा उठाता है]

देवल (आगे की ओर लपकता है, गोगो उसे कसकर पकड लेता है) ओ खूनी भेडिए ! शर्म नही आती तुझे बुढिया पर हाथ उठाते ? मुझपर चला गोली, मुझे मार। पर कितनो को मारेगा तू ? मेरे खून की एक बूँद से एक हजार देवल पैदा होगे और जब तू करोडो फौलादी कलेजो से निकली हुई हुकार सुनेगा तो तेरा कलेजा काँप उठेगा।

वांगचू (पूरे गले से चीखकर) खामोश !

देवल (पूरे गले से) यह वक्त की आवाज है। इसे तू तो क्या, ये सारे पहाड मिलकर भी नही दबा सकते !

[वांगचू क्रोध से दांत पीसता हुआ देवल की ओर बढता

है, तभी बाहर से ढोल बजने की आवाज आती है। गोगो और देवल एक-दूसरे की ओर देखते है। बागचू, फुँगशी, नीमो, सुहाली, मातई सब ढोलो की आवाज सुनते हैं। मच पर कुछ क्षणो तक सन्नाटा रहता है। ढोल बजते रहते है। बागचू फुँगशी से चीनी भाषा मे कुछ कहता है। फुँगशी अपनी टॉमीगन बागचू को देता है। बागचू पिस्तौल को बेल्ट मे खोस लेता है। फुंगशी बाहर की ओर चलने लगता है। सुहाली के पास आकर फुँगशी रुकता है और एक ही झटके से सुहाली के गले मे पडा हुआ चाँदी का मोटा-सा हार खीच लेता है। सुहाली भय से चीखती है ; फिर फुंगशी मातई के गले की ओर लपकता है। बागचू लपककर अपने फौजी बूटो की एक करारी ठोकर फुंगशी को मारता है और चीख-चीखकर चीनी भाषा मे कुछ कहता है। फुंगशी पुल की ओर बढ़ता है और गोगो वाली टॉमीगन उठाकर बाहर चला जाता है। ढोल बजते रहते हैं। फुगशी के जाने के बाद बागचू खुद मातई के गले मे पडी हँसुली खीचकर अपनी जेब के हवाले करता है और फिर मातई को बूट की एक ठोकर मारता है। मातई गिरती है। सुहाली घुटनो पर बैठकर उसे सँभालती है। ढोल धीमे पडते है]

वांगचू : (देवल-गोगो से) हम लोग ज्यादा देर तक कैदी रखने के आदी नही, मेरे दोस्त! वस यह आखिरी लमहा है।

[वागचू अपनी पिस्तौल ऊँची करता है]

नीमों (आगे वढकर) चीनी राजा चीनी राजा · मेरी एक फरियाद है।

वांगचू : तुम अच्छे आदमी हो। हम तुम्हारी वात सुनेगे। जल्दी वोलो!

नीमो (देवल की ओर इशारा करके) इस आदमी को जिन्दा नही छोडना चाहिए।

वांगचू . हम विल्कुल यही करेगे।

नीमो यह मेरा जानी दुश्मन है।

वांगचू · हम तुमसे और खुश हुए।

नीमो इसे मै अपने हाथो से मारना चाहता हूँ।

वांगचू शावाश! आगे वढो वहादुर, हम तुमको इनाम देगे।

[नीमो छुरा खीचता है]

गोगो (चिल्लाकर) नीमो! नीमो!

[नीमो आगे बढता है]

देवल सफेद धरती पर पैदा होकर भी तुम्हारा दिल काला है, वडे भैया!

नीमो (अचानक मुडकर) मुझे कुछ डर लग रहा है, चीनी राजा! यह वह आदमी नही है जिसे मै जानता था।

वांगचू : बेवक़ूफ ! डर लग रहा है तो इसे नए तरीके से मार।

नीमों : पर मुझे नया तरीका नहीं आता।

वांगचू : (क्षण-भर सोचकर) मैं बताता हूँ। (वांगचू पीछे लगी पेटी से पिस्तौल निकालकर नीमो को दे देता है) अब उसके ठीक सामने खड़ा हो जा।

[नीमों पिस्तौल लेकर देवल के सामने खड़ा होता है]

अब नीचे वाली कमान दबा दे। जल्दी कर !

नीमों : (कुटिलता से मुस्कराकर) अब देर नहीं है, चीनी राजा !

माँ कहकर दौड़ते है, मातई दोनो को नि.शब्द भाव से रोते हुए गले से लगा लेती हैं। फिर अचानक उसकी निगाह वांगचू की लाश पर जाती है। मातई के चेहरे के भाव बदल जाते है। वह देवल, नीमो को छोडकर वांगचू की लाश की ओर बढती है]

मातई : (घृणा और क्रोध से दांत पीसकर) प्यार का खून करने वाले दरिन्दे, तेरी यही सजा है। (चीखकर) यही सजा है तेरी।

[अचानक पुल पर दौडते हुए शीकाकाई का प्रवेश। सब लोग पुल की ओर देखते है। शीकाकाई पुल की रेलिग पकडकर हाँफती है]

शीकाकाई : वे आ रहे हैं···बहुत बडी तादाद मे।

[शीकाकाई तेजी से पुल के नीचे उतरकर आती है]

दो तरफ से आगे बढ रहे है।

[मातई, नीमो, सुहाली, सब उसे साश्चर्य देखते हैं]

गोगो : देवल, मै खबर देने जा रहा हूँ।

[गोगो शीकाकाई के हाथो से स्टेनगन लेकर तेजी से पुल के बाहर निकल जाता है]

देवल : और वह तुम्हे कहाँ मिली ?

शीकाकाई : एक चीनी को गोली मारकर। वह इसी ढलान पर था ; और यह भी।

[शीकाकाई एक मोटा-सा हार दिखाती है। देवल उसे लेकर सुहाली की ओर फेंक देता है। सुहाली खुश होती है। मातई और नीमो शीकाकाई को साश्चर्य देखते है। अचानक पृष्ठभूमि से मशीनगनो की टिकटिक और पहाडी तोपो की आवाज उभरती है। क्षण-भर बाद ढोल बजते है। सब लोग ध्यान से आवाजें सुनते है]

तेजी से पर्दा गिरता है।

द्वितीय अंक

स्थान और दृश्य — पहले अक की भॉति ।

समय — तीसरे पहर के लगभग ।

[पर्दा उठने पर झोपडी की छत पर, पुल की रेलिग पर, सीढियो पर और पत्थरो पर पतली-सी बर्फ जमी दिखाई पडती है । नाले की बगल-वाली दीवार पर कुछ बन्दूके और टॉमीगने कतार मे रखी है । नाले के अन्दर भी तीन-चार वडी-वडी पेटियॉ रखी है । नाले के ठीक ऊपर पुल की रेलिग से एक लालटेन बँधी है । पर्दा उठने पर नाले के सामने वाले पत्थर पर नीमो बैठा दिखाई देता है । वह दोनो हाथो से अपना सिर पकडे झुका हुआ बैठा कुछ सोच रहा है । पृष्ठभूमि मे हल्की-हल्की तूफानी हवा चल रही है । कुछ क्षणो के पश्चात् अन्दर से सुहाली दोनो हाथो मे एक लकड़ी का पात्र लेकर आती है । नीमो उसी प्रकार सिर झुकाए बैठा रहता है । नीमो आहट महसूस करके सिर उठाकर सुहाली को देखता है । सुहाली से पात्र लेकर वह एक ही साँस मे अन्दर का द्रव पी जाता है]

नीमों · और है ?

[सुहाली नकारात्मक सर हिलाती है]

और कुछ है ?

[सुहाली नकारात्मक सर हिलाती है]

(अचानक ऊँचे स्वर मे) क्यो नही है ?

[सुहाली एक कदम पीछे हटकर भयभीत निगाहो से नीमो को देखती है]

(ऊँची आवाज मे) कल भी कुछ नही था (गिरी (आवाज मे) आज भी कुछ नही है ।

[मातई का झोपडी से प्रवेश । उसके गले के दोनो ओर कारतूसो की पेटियाँ है और कमर मे हथगोले बँधे है]

मातई (डाँटकर) क्यो चिल्ला रहा है ?

नीमो चिल्लाऊँ नही तो फिर क्या करूँ ? वर्फ खाकर पेट की आग बुझाऊँ ? जानती हो, कल से मैने कुछ नही खाया है ?

मातई भूख के मारे मेरी आँते ऐठ रही है । कल रात के हमले मे वन्दूक मेरे हाथो से छूटी पड रही थी, पैर लडखडा रहे थे, आँखो के सामने चिनगारियाँ उड रही थी ।

[मातई नीमो पर एक उडती निगाह डालकर चुपचाप एक बन्दूक उठाकर पत्थर पर बैठ जाती है और खामोशी से उसकी जाँच करती रहती है]

नीमो (खड़ा होकर) ऐसी लड़ाई लडने से तो मर जाना अच्छा है।

मातई . (चीखकर) नीमो !

मातई (कटुता से) मै सच कहता हूँ, माँ, मर जाना अच्छा है।

मातई तो फिर जा मार ले गोली। दो दिन की भूख ने जानवर बना दिया ?

नीमो (करुण स्वर मे) भूख जानवर बना देती है, माँ ! (क्षण-भर बाद अचानक ऊँचे स्वर मे) और मै बहुत भूखा हूँ।

मातई कौन नही है ? सुहाली···गोगो 'देवल शीका-काई दल के लोग ··हम सबने भी तो अन्न का दाना तक पेट मे नही डाला है !

नीमो . तुम सब लोग निराले हो, तुम्हे अपने ऊपर काबू है। मुझे नही।

मातई : (खडी होकर) तुझे अपने ऊपर काबू करना चाहिए। (कुछ रुककर) भूखे और नगे रहकर ही लडाइयाँ लडी जाती हैं।

नीमों लेकिन पेट की भूख से कौन जीतेगा ?

मातई : जिसे लडाई जीतनी है।

नीमों : (ऊँचे स्वर मे) पर कौन जीतेगा लडाई ? ये मुट्ठी-भर लोग ? (कटुता से) भूख और बीमारी

से जकडे हुए मुट्ठी-भर लोग ? (चुनौती के स्वर मे) हुँ !

मातई हाँ, यही मुट्ठी-भर लोग। ये वह करेगे जिसके लिए दोनो पोलो ने इन्हे आदमी का जन्म दिया है। (कुछ रुककर) सवाल कम-ज्यादा का नही, सवाल सिर्फ लडाई जारी रखने का है।

नीमो तुम लोगो के सामने कोई भी सवाल क्यो न हो, मेरे सामने सिर्फ एक है

मातई . और वह है पेट का।

नीमो : हाँ, पेट का। उस भूख का जो मुझे खाए जा रही है।

मातई (चीखकर) तो फिर तू मुझे खा ले। बोल, खाएगा मुझे ?

नीमो . (चिल्लाकर) माँ !

मातई (घृणा से) जानवर !

नीमो (और जोर से) माँ !

[नीमो मातई को कुछ क्षणो तक घूरता रहता है, फिर जोर से लकडी का पात्र पटककर पुल के बाहर चला जाता है]

मातई · (नीमो को जाता देखती रहती है) जानवर कही का !

[सुहाली चुपचाप खडी रहती है]

[पुल पर से गोगो का प्रवेश। अन्य पुरुष-पात्रो की भाँति उसकी भी दाढी बढी हुई है और गले के दोनो

श्रोर कारतूसो की पेटियाँ बँधी है। उसके चेहरे पर थकान है, पर बातचीत मे वही दृढ़ता। गोगो बार-बार उसी श्रोर देखता हुआ नीचे उतरता है जिधर से नीमो गया है]

गोगो (नीचे श्राकर मातई से) क्या नीमो पहरे पर गया है, मातई ?

मातई : हूँ ' गया है।

गोगो पर उसके हाथ मे बन्दूक तो थी नही ?

मातई : उसके हाथो ने बन्दूक पकडने से इन्कार कर दिया है।

गोगो : क्यो ?

मातई . वह भूखा है, इसलिए। (घृणा से) जानवर कही का !

[गोगो दीवार से लगी एक बन्दूक उठाकर सुहाली को देता है]

यह नीमो को दे दो जाकर। वह बाहर ढॉक पर बैठा है।

[सुहाली बन्दूक लेकर पुल से बाहर चली जाती है। मातई खामोशी से पत्थर पर बैठी है]

गोगो · देवल लौटा ?

मातई : नही।

गोगो . श्रौर गीकाकाई ?

मातई	वह भी उसीके साथ है।
गोगो	: (गम्भीरता से) दोनो अभी तक गायव हैं ?
मातई	हाँ, दोनो। (कुछ सोचकर) क्यो ?
गोगो	: मुझे देवल से कुछ वाते करनी है।
मातई	क्या वात है ?
गोगो	उसी के सामने होगी।
मातई	(झोपड़ी की ओर वढते हुए) थोडी-सी अपोग वची है, पियोगे ?
गोगो	नही।
मातई	क्यो ?
गोगो	पेट भरा है।
मातई	(साश्चर्य) पेट भरा हैं ?
गोगो	हाँ, मातई ! रोमी के पेड की जड खाई है। (मुस्कराकर) सच कहता हूँ, मातई, गले तक पेट भरा है।
	[मातई एक क्षण गोगो को देखती रहती है, फिर अचानक खिलखिलाकर हँस पडती है। गोगो भी हँसता हे। सुहाली सिसकती हुई पुल की सीढियो से उतरकर नीचे आती है]
मातई	क्या वात है ?
	[सुहाली मातई की ओर देखती है]
	क्या नीमो ने तुझे मारा ?

[सुहाली असहमति-सूचक सर हिलाती है]

(चिढकर) तो फिर रो क्यो रही है ?

[सुहाली हाथ के इशारो से बताती है कि नीमों उसके हाथ से बन्दूक छीनकर नीचे ढलान की ओर भाग गया है]

(चौंककर) क्या ? नीचे ढलान की तरफ भाग गया है ?

[सुहाली सिसकते हुए सहमति-सूचक सर हिलाती है]

गोगो : नीमो का दिमाग आज सुबह से खराब है। जाकर जल्दी देखो, कही कुछ पागलपन न कर बैठे।

[गोगो अपनी बन्दूक उठाकर सीढ़ियो की ओर बढता है। तभी पुल पर नीमो का हाँफते हुए प्रवेश]

नीमो . (तेजी से) गोगो, जल्दी आओ। नीचे वाली बर्फीली ढलान पर एक आदमी पडा है।

मातई : (कड़ककर) नीमो ! तुम नीचे आओ।

[नीमो पुल के नीचे आता है, गोगो सीढियो पर खडा है]

नीमों : (बेरुखी से) क्या है ?

मातई : तुम गोगो के साथ नही जा रहे हो।

नीमो : क्यो ?

मातई . (दृढ स्वर मे) इसलिए कि जानवरो से हमारा कोई

रिश्ता नही। हम अपने काम खुद करेंगे। हमे तुम्हारी मदद की जरूरत नही है।

नीमों . (क्रोध से) क्यो ? आखिर क्यो ?

मातई · क्योकि तुम भूखे हो।

नीमों . (आहत स्वर मे) माँ !

मातई . क्योकि पेड़ो की जड़े खाकर तुम जिन्दा नही रह सकते।

नीमों : माँ !

[नीमो दुःखी-सा पत्थर पर बैठ जाता है]

मातई : (गोगो से) चलो, गोगो !

[मातई पुल की ओर बढ़ती है]

नीमो · (दयनीय स्वर मे) माँ· मुझे· · · मुझे कभी-कभी न जाने क्या हो जाता है।

[गोगो-मातई सीढियो पर रुककर नीमो की ओर देखते है]

मै · ·मै इतना बुरा नही हूँ, माँ, जितना तुम मुझे समझती हो।

[मातई सीढियो से नीचे उतरकर नीमो के पास आती है। वह प्यार से नीमो की पीठ पर हाथ फेरती है। नीमो उसकी ओर दयनीय आंखो से देखता है]

मातई (भरे कंठ से) अन्दर की आग दबा दे, मेरे बेटे ! वह झूठी आग है।

[नीमो खड़ा होकर अचानक मातई के गले से माँ कह-कर लिपट जाता है। क्षण-भर दोनो वेसे ही खड़े रहते है। फिर मातई उसे अपने से अलग करती है। मातई दोनो हाथ नीमो के कंधो पर रखे रहती है]

मातई : जा देख तो जाकर, कौन अभागा बर्फ पर पडा है।

[नीमो सिर झुकाकर चुपचाप गोगो के पीछे-पीछे चला जाता है]

(सुहाली से) क्यो री ! शीकाकाई तुझे कैसी लगती है ?

[सुहाली आँखें चमकाकर और मटकाकर बताती है कि बहुत अच्छी लगती है]

देवल उसे बहुत प्यार करता है न ?

[सुहाली सहमति-सूचक सिर हिलाती है]

अरी हट री चुडैल ! नीमो भी तो तेरे पीछे दीवाना है।

[सुहाली शरमाकर निगाहे नीची कर लेती है]

क्यो री गूँगी ! सोच तो, कितनी अजीब बात है ! कभी-कभी कहाँ-कहाँ के लोग अचानक जुड जाते है और जुडे-जुडाए लोग टूट जाते है।

[सुहाली मूक अभिनय से मातई को समझाने की कोशिश करती है कि वह उसकी बात नही समझी]

अरी, समझ भी लेगी तो बोल न सकेगी।

[सुहाली दयनीय-सा मूक अभिनय करके यह प्रदर्शित करती है कि वह गूंगी है]

तू बडी भागवान है री! दोनी पोलो ने तुझे जीभ न दी। कम-से-कम कोई बुरी बात तो न कह सकेगी। और सुन, इस बार मरकर जब मै दोनी-पोलो के यहाँ पहुँचूंगी तो उनसे कहूँगी कि आदमी के दोनो हाथ भी वापस ले लो।

[सुहाली हाथो के इशारे से पूछती है, क्यो?]

अरी, सोच तो! अगर हाथ न होते तो मौत उगलने वाले हथियार कैसे चलाए जाते? कैसे कोई दूसरे की जमीन, दूसरे की झोपडी, दूसरे के जेवर लूटता? यह सब तो यही पापी हाथ करते हैं न?

[सुहाली गौर से मातई की बातें सुन रही है]

पर एक बात है। हाथ बडे काम के भी है। अपनी जमीन, अपनी झोपडी बचाने मे भी तो यही काम आते है। और जब बहुत-से हाथ जुड जाते है तो बडी मजबूत चट्टान बन जाती है, इतनी सख्त कि सौ बिजलियाँ गिरे तो भी न टूटे।

[पुल पर गोगो और नीमो का प्रवेश। दोनो के बीच मे एक लम्बा-तगडा फौजी जवान है जिसका बायाँ हाथ गोगो के गले मे झूल रहा है और सिर झुका है। नीमो वही रुक जाता है। गोगो फौजी का धीरे-धीरे

नीचे लाता है। मातई और सुहाली आश्चर्य से देखती हैं। फौजी भारतीय सेना की पोशाक पहने है जो जगह-जगह फटी है। नीमो क्षण-भर बाद पुल से बाहर जाता है। गोगो फौजी को नीचे लाकर एक पत्थर पर बैठाता है। मातई और सुहाली आगे बढ़कर उसे ग़ौर से देखती है]

(गोगो से) यह कौन है ?

गोगो : हिन्दुस्तानी फौज का आदमी।

मातई : यही पड़ा था बर्फ पर ?

गोगो : हाँ।

[मातई फौजी के हाथ-पैर छूकर देखती है। फौजी की आँखें बन्द है]

मातई : अरे ! इसके हाथ-पैर तो बिल्कुल सुन्न हो गए हैं। (सुहाली से) सुहाली, जरा अन्दर से बची हुई अपोंग ले आ, जल्दी !

[सुहाली तेजी से झोपड़ी के अन्दर जाती है। मातई अपने काले रंग की मोटी ऊनी चादर फौजी के पैरों पर डालती है]

(फौजी के सर पर हाथ फेरकर) बेचारा !

[फौजी अपनी आँखें खोलता है। वह इधर-उधर खड़े हुए लोगों को देखता है, फिर मातई की ओर अपना सर घुमाता है]

फौजी : (उखड़े पर दृढ स्वर मे) क्या कहा तुमने ?

बेचारा ?·· खबरदार जो मुझे बेचारा कहा !

[फौजी उठने की कोशिश करता है । गोगो बढ़कर उसे बैठाने की कोशिश करता है। अन्दर से सुहाली का लकडी के पात्र मे अपोग लेकर प्रवेश]

मातई : ऐसे ही बैठे रहो। तुम्हारी तबीयत ठीक नही है, फौजी !

[मातई सुहाली से अपोग का पात्र लेकर फौजी के ओठ से लगा देती है]

इसे पी लो, फायदा होगा।

[फौजी धीरे-धीरे सारी अपोग पी जाता है। मातई पात्र सुहाली को वापस कर देती है । फौजी फिर खड़ा होने की कोशिश करता है। मातई उसे बैठाती है]

उठो मत ! तुम्हारी तबीयत ठीक नही, तुम बीमार हो।

फौजी . (खड़ा होकर, दृढ स्वर मे) न तो मै बेचारा हूँ और न बीमार। समझे तुम लोग ? (कुछ गिरी आवाज मे) मै जा रहा हूँ।

[तूफानी हवा का शोर उभरता है]

गोगो : कहाँ ?

फौजी · निचले पडाव तक।

तई : क्यो ?

फौजी : यह सवाल क्यो पूछ रहे हो तुम ? तुम्हे मतलब ?
गोगो . (मुलायम स्वर मे) मतलब है।
फौजी . क्यो ?
गोगो . हम सब भी वही है, जो तुम हो।
मातई . और हवाएँ भी कितनी तेज है! (आसमान की ओर देखकर) देखो न, शायद बर्फीला तूफान आने वाला है।
फौजी . बर्फीले तूफानो की कालीन पर हमारे पैर जलते नही, क्योकि जो तूफान हमारे दिलो मे है, वह सबसे बडा है।
मातई : (प्यार से) फौजी, तूने तो हमारे ओठो की बात छीन ली।
फौजी (ऊँचे स्वर मे) छीन ली ? क्या समझती हो मुझे ? मै हिन्दुस्तानी फौज का जवान हूँ। हम खुद किसी की कोई चीज नही छीनते है। (दाँत पीसकर) हम सिर्फ छीनी हुई चीजे वापस लेते है।
मातई अरे ओरे ! तू तो नाराज हो गया।
फौजी . हाँ, मै नाराज हूँ। मै खुश कैसे रह सकता हूँ ? खूनी भेडियो की पलटने घरो के अन्दर घुसी है। वे जब तक अन्दर है तब तक मै नाराज रहूँगा।
गोगो : (प्रशसा-भरे अन्दाज मे) जवान ! तुम सचमुच आदमी हो।
फौजी . सिर्फ आदमी नही हम सब जवान आदमी है और आदमी से भी बडे थे वे सब जो (दुःख से) जो अब नही हैं।

मातई यह सच है, बेटा !

फौजी (बिगडकर) मत कहो मुझे बेटा ! मै किसी का बेटा नही, कोई मेरी माँ नही ! सिर्फ एक माँ है जिसके सफेद बालो की मजबूती को सगीनी चुनौती दी गई है। हमे इन बालो की इस्पाती सख्ती का अहसास कराना है। सिर्फ उसी माँ की आवाज मेरे कानो मे गूँजती है, सिर्फ उसी माँ के प्यार का हाथ मेरे सिर पर है, सिर्फ उसी के लिए मै जिन्दा हूँ।

मातई : (भावावेश मे) काश कि तू मेरा तीसरा बेटा होता !

[पुल पर अचानक नीमो का प्रवेश। नीमो वही से चिल्लाता है]

नीमो : होशियार ! एक खोज-दस्ता इधर ही आ रहा है।

[गोगो अपनी स्टेनगन उठाकर पुल की ओर लपकता है। सुहाली तुरन्त एक बन्दूक उठाकर मातई को देती है। मातई बन्दूक फौजी को दे देती है। फौजी पुल की ओर बढता है। सुहाली दूसरी बन्दूक मातई को देती है। गोगो पुल पर से फौजी को सीढियो पर ही रुकने का इशारा करता है। नीमो, गोगो उसी ओर देखते हैं]

(उसी ओर देखते हुए) काफी लोग है।

[गोगो नीमो को पीछे हटाकर पुल पर आगे बढ़ जाता है]

गोगो (गिनते हुए) एक दो · तीन चार· पाँच···
छ, · सात।

नीमों (अचानक चीखकर) वे ढलान की ओर आ रहे हैं।
[दूर पृष्ठभूमि मे चीनी भाषा मे ऊँचे स्वर मे बोलने और हँसने की आवाजें आती है]

गोगो (मातई से) मशीनगन !

[मातई और सुहाली नीचे की ओर लपकती हैं और एक हल्की मशीनगन निकालकर सीढियो पर खड़े हुए फौजी को देती है। फौजी बन्दूक वही रखकर मशीनगन ले लेता है और उसे नीमो को दे देता है। देखते-ही-देखते मशीनगन गोगो के पास पहुच जाती है। सुहाली दूसरी बन्दूक उठा लेती है ताकि माँगने पर दी जा सके]

(मशीनगन लेकर लेटते हुए चिल्लाता है) हथगोले !
[मातई फौजी के पास होकर सीढियो से पुल पर जाती है और कमर से एक ग्रेनेड निकालकर हाथ मे ले लेता है। फौजी सीढियो पर भौंचक्का खडा यह सब देखता है। गोगो मशीनगन पर निशाना लगाए लेटा हुआ है। उसका दाहिना हाथ आक्रमण का इशारा करने के लिए ऊपर उठा है। नीमो अपनी बन्दूक पर निशाना लगाए गोगो के पीछे झुका खडा है । मातई नीमों के

पीछे हथगोला सँभाले खडी है। नीमो की बन्दूक ऐसे घूम रही है मानो कुछ लोग दूर से पास आ रहे है। चीनियो की बातचीत की आवाजें करीब आती है। मच पर मौत का-सा सन्नाटा छाया है। सिर्फ तूफानी हवा का हल्का शोर सुनाई पडता रहता है। चीनियों की आवाजें अचानक दूर जाने लगती हैं। नीमो की बन्दूक भी वैसे ही घूमती है। आवाजे दूर जाकर गायब हो जाती है। गोगो का हाथ धीरे से नीचे गिर जाता है। नीमों की बन्दूक नीची हो जाती है। मातई हथगोला कमर मे खोस लेती है। नीचे सुहाली चैन की साँस लेती है। गोगो खडा होकर नीमो और मातई की ओर देखता है। अचानक वह हँस पडता है। नीमो और मातई भी हँसते है। धीरे-धीरे हँसी के स्वर ऊँचे होते है। फौजी भौचक्का-सा वही सीढियो पर खडा रहता है। मातई हँसती हुई सीढियो से नीचे उतरती है। गोगो नीमो की पीठ पर हाथ रखकर कुछ अस्पष्ट स्वरो मे कहता है। नीमो वही पुल से बाहर चला जाता है। गोगो सीढियो से नीचे उतरता है। वह मुस्कराते हुए फौजी की पीठ ठोक्कर नीचे आता है। सुहाली अपने हाथ की बन्दूक पुल की दीवार से सटाकर रख देती है। गोगो उसी के पास मशीनगन रख देता है। मातई भी अपनी बन्दूक रख देती है]

गोगो : (सुहाली से) मेरी बन्दूक पुल पर है, उसे लेकर तुम नीमो के साथ पहरे पर रहो।

[सुहाली सीढियो से पुल पर चली जाती है। फौजी सीढियो से नीचे उतरकर आता है]

फौजी . वे सब मेरे लिए आए थे।

[सुहाली पुल पर से बन्दूक उठाकर बाहर चली जाती है]

गोगो तुम्हारे लिए आए थे ?

फौजी : (गम्भीरता से) हाँ, मेरे लिए· शिकारी कुत्तो की तरह मेरा पीछा करते हुए।

गोगो . क्यो ?

फौजी · (फौजी एक बार गोगो की ओर देखता है) इसलिए कि मै उनके काँटेदार घेरो को तोडकर भाग निकला हूँ।

मातई : क्या तुम पकडे गए थे ?

फौजी : हाँ। मेरी खाई को लामाओ की पोशाक पहने हुए जानवरो ने घेर लिया था। हम सब आखिरी वक्त और आखिरी गोली तक लडते रहे। फिर मेरे हवलदार को गोली लगी। (फौजी क्षितिज के एक कोने को घूर रहा है जैसे सब-कुछ उसे दिखाई दे रहा है) मुझे पिछली चौकी मे खबर करने को कहकर, मेरा हवलदार, देश के लिए···(क्षण-भर रुककर) देश के लिए जी गया।

[मातई पैरो पर झुककर बैठ जाती है और अपना सर नीचा कर लेती है, मानो मृत-आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना कर रही हो]

फौजी . तब मै खाई से गोलियाँ बरसाता हुआ भागा। (कुछ रुककर) पर उन्होने मुझे पकड लिया। (पुनः रुककर) फिर वे मुझे सारी रात नगी बर्फ पर घसीटते हुए ले गए और एक काँटेदार बाडे मे बन्द कर दिया।

[मातई उठकर खडी हो जाती है और अपने आँसू पोछती है]

वहाँ और भी, कैदी थे' बीमारी और भूख से तडपते हुए तमाम ' कैदी ' भूख के नाम पर हमे पानी दिया और दवाओ के नाम पर गोली।

मातई (क्रोध से काँपकर चीखती है) कुत्ते कही के ! कुत्ते !

फौजी और फिर कल रात को मै भाग निकला। बर्फीली पहाडियो के पीछे छुपता-छुपाता मैं इस जगह तक आया। तुम्हारी झोंपडी के सामने आकर मेरे पैरो ने मुझे जवाब दे दिया।

गोगो (सशकित स्वर मे) पर तुम्हे यह कैसे मालूम हुआ कि यहाँ झोपडी है ?

फौजी मैं जानता था कि काँटेदार घेरो को तोडने के बाद फिर मैं अपनो को ही पाऊँगा।

मातई . (चैन की साँस लेकर) हम तो डर गए थे, फौजी ! हमारी झोपडी बहुत ऊँचाई पर है और आने का

रास्ता सिर्फ एक। और इस रास्ते के आखीर मे एक ऊँची-सी बर्फीली पहाडी है। उसे भेदकर झोपडी का पता लगाना बहुत मुश्किल है।

गोगो : इसीलिए तो उन शिकारी कुत्तो को भी लौटना पडा जो तुम्हारा पीछा करते आए थे। वे यह सोच ही न पाए कि पहाडी के पीछे भी कुछ हो सकता है।

फौजी : ताज्जुब है! उन्होने बर्फ मे पैरो के निशान भी न देखे ?

गोगो : पैरो के निशान ? उन्हे तो नीमो अन्दर आने से पहले ही मिटाता आया था।

फौजी : मै अहसानमन्द हूँ आप लोगो का। अब एक अहसान और कीजिए। (अपने हाथो की ओर इशारा करके) यह मुझे ··

गोगो : (बीच मे ही) तुम इसे ले-जा सकते हो, फौजी!

मातई : क्या तुम वाकई जा रहे हो ?

फौजी : हाँ, मुझे जाना ही चाहिए।

गोगो : रास्ते मे जरा होशियारी से काम लेना! फौजे आगे निकल चुकी है और जगह-जगह घमासान लडाई हो रही है।

मातई : और यह कम्बल लेते जाओ।

गोगो : बर्फीले इलाको से पैरो की हिफाजत बहुत जरूरी है। फिर तुम्हारे पैर · इनपर तो देश खडा है।

फौजी : जिन कदमो पर यह देश खडा है इनकी हिफाजत तो हिमालय की गर्मीली साँसे कर रही है। उनवे बहाव मे कोई कमी नही आ सकती। पथरीली चट्टाने मोम की टहनियो की तरह झुक गई है औ बहुत बड़ी तादाद मे वे आ रहे है सफेद ऊँचाइयो का जवाब देने के लिए। उनकी तरतीबी से भरे बूटो की आवाज मै अब भी सुन सकता हूँ (कुछ रुककर) और अब उनके हथियारो के सैकड़ो इस्पाती छेदो से देश का क्रोध गरजेगा। धोखे के बादल अब छँट चुके है। लाल मिर्ची से अधी आँखे साफ हो चुकी है, पर उनमे अभी कसक बाकी है और वे तनी है। अब शोले बरसेगे·· शोले! (मातई से) अगर जिन्दा रहा तो एक बार मै फिर तुम्हारी झोपडी मे आऊँगा और तब मैं तुम्हे माँ कहकर तुम्हारे पैरो की धूल अपने माथे पर लगाऊँगा।

[मातई दु खी-सी फौजी की ओर देखती है। फौजी बिना किसी ओर देखे, शान से मुड़कर, सीढ़ियो पर चढकर पुल के बाहर निकल जाता है। गोगो और मातई उसे देखते रह जाते हैं]

मातई · (भावावेश मे) गोगो! मेरी कोख फिर-फिर गरु-आने लगती है, ऐसा बेटा पैदा करने के लिए।

गोगो · तुम्हारे दोनो बेटे भी ऐसे ही है, मातई ' नीमों और देवल, दोनो।

मातई : (अचानक) देवल अभी तक लौटा नही ?

गोगो : हाँ, उसे अब तक लौट आना चाहिए था।

मातई : कोई खबर भी नही मिल सकती ?

गोगो : नही। अपने ढोलो का सिलसिला टूट चुका है। जोरम को मैने सियाँग नदी तक भेजा है। वहाँ दुश्मन की फौजो का काफी जमाव है। वह अँधेरा होते ही काले पहाड के नीचे मिलेगा।

मातई : (कुछ रुककर) दल के आदमी भी बराबर कम हो रहे है।

गोगो : हाँ मातई, खासकर चुने हुए आदमी बहुत थोडे रह गए है। सिर्फ कल रात के छापे मे ही तेरह आदमी मारे गए। नीमो की और मेरी जिन्दगी शायद कुछ बडी थी। हम दोनों बच निकले।

मातई : (कुछ सोचकर) क्या देवल बहुत खतरनाक काम पर गया है ?

गोगो : खतरा तो हमारी जिन्दगी का साया है, मातई ! ऐसा साया जो हमारे पीछे नही, आगे चलता है।

मातई : और उसके साथ शीकाकाई भी है।

गोगो : वह एक बहादुर लड़की है।

मातई : (कुछ सोचकर) गोगो, फौजी कह रहा था बहुत बडी फौज आ रही है ?

गोगो : जरूर आएगी, पर तब तक हमारा काम जारी रहना चाहिए।

मातई : (पत्थर पर बैठती हुई) हमारा काम जारी रहेगा।

[नीमो का पुल पर प्रवेश]

नीमों : (पुल से) गोगो, देवल आ रहा है।

मातई . और शीकाकाई ?

नीमो . वह भी है।

गोगो : उन्हे सीधे मेरे पास भेज दो और तुम नीचे आ जाओ।

नीमों : पहरे पर कौन रहेगा ?

गोगो . सुहाली।

[नीमो एक क्षण के लिए बाहर चला जाता है]

मातई : मै काले पहाड तक जा रही हूँ।

गोगो : हम लोगो मे से कोई चला जाएगा, मातई !

मातई नही। मै जाऊँगी। साँझ होने मे अब देर नही। जोरम रास्ता देख रहा होगा।

[मातई बन्दूक उठाकर सीढ़ियो की ओर बढती है]

गोगो : जरा होशियारी से जाना, मातई !

मातई (मुड़कर) मेरी फिकर न करो। हाँ, एक बात और। अगर किसी को सजा देनी हो बेखटके दो (कुछ रुककर) भले ही वह मातई का ही बेटा क्यो न हो।

[मातई सीढियाँ चढ़कर पुल से बाहर चली जाती है। नीमो पुल पर से नीचे आता है]

नीमों : कोई खास बात है, गोगो ?

गोगो . (गम्भीरता से) हाँ, बैठो !

[नीमो पत्थर पर बैठ जाता है और उत्सुकता से गोगो की ओर देखता है। तभी देवल और शीकाकाई पुल

पर आते है। दोनो काफी थके और गम्भीर मालूम पड़ रहे हैं। देवल के माथे पर कपड़े का टुकडा बँधा है। उसकी दाढी बढी है। दोनो हाथों मे बन्दूकें है। देवल आगे है और उसके पीछे शीकाकाई। नीचे आकर शीकाकाई झोपड़ी के अन्दर चली जाती है। देवल गोगो की ओर बढता है]

देवल : हमला बेकार हुआ।

गोगो : (घूरते हुए) मुझे मालूम है।

देवल : (चौंककर) तुम्हे मालूम है ?

गोगो : हाँ।

देवल : कैसे मालूम हुआ ?

गोगो : जोरम से।

देवल : तो वह जिन्दा है ?

गोगो : मरते-मरते बचा है।

देवल : हम दोनो भी मरते-मरते बचे है।

गोगो : जाहिर है।

[देवल गोगो की ओर देखता है। गोगो उसे पहले की ही तरह घूर रहा है]

देवल : ऐसे घूर-घूरकर क्यो देख रहे हो ?

[नीमो कभी गोगो की ओर और कभी देवल की ओर देख रहा है। गोगो देवल के प्रश्न का कोई उत्तर नही देता और उसे घूरता रहता है]

आखिर तुम कहना क्या चाहते हो ?

गोगो . कहना नही, पूछना चाहता हूँ ।

देवल तो फिर खामोश क्यो हो ? पूछो !

गोगो . हमला सुबह से पहले हुआ था ?

देवल . हाँ ।

गोगो और सुबह से पहले खत्म हो गया था ?

देवल · हाँ ।

गोगो : और अब शाम होने वाली है ।

देवल . हाँ !

गोगो : (ऊँचे और कड़े स्वर मे) हाँ-हाँ क्या कर रहे हो ? कहाँ थे अब तक ?

[देवल खामोश रहता है । वह गोगो की ओर देखकर सिर भुका लेता है]

(उसी तरह) जिस बात का मुझे डर था, वही हुआ ।

नोम गोगो, आखिर बात क्या है ?

[illegible] (देवल की ओर उँगली उठाकर) बात ? इससे पूछो । प्यार और मुहब्बत के रग-बिरगे धागो मे बँधे हुए इस आदमी से, जिसे अपने काम से ज्यादा औरत प्यारी है ।

देवल . (प्रतिवादी स्वर मे) यह झूठ है, गोगो ! यह झूठ है ।

[शोकाकाई का झोपडी के अन्दर से प्रवेश । वह दरवाजे पर खडी हो जाती है]

गोगो तो फिर सच क्या है ?

शोकाकाई (आगे बढकर) मै बताती हूँ सच क्या है । देवल के सर मे गहरी चोट आई थी । बेहोशी की हालत

मे मै इन्हे एक पहाड़ी की खोह के अन्दर खीच ले गई और वही पर·

गोगो : (बीच मे ही) और वही सारा दिन देवल के रेशमी बालो से तुम्हारी नरम उँगलियाँ उलझी रही। यही न ?

देवल : गोगो !

शीकाकाई · तुम्हे हो क्या गया है, सरदार ?

गोगो : (ऊँचे स्वर मे) यही सवाल तो मै तुम दोनो से पूछना चाहता था ·पर मै इसका जवाब जानता हूँ। मै जानता हूँ कि प्यार की धडकनो मे जग की आवाज डूब जाती है। मै जानता हूँ कि मुहब्बत की आँधी फर्ज की चट्टान को तोड देती है।

नीमों . तो क्या मुहब्बत करना जुर्म है ?

गोगो · (दृढता से) हाँ, है। जब नापाक इरादे वाला दुश्मन मौत और बरबादी के साए फैला रहा हो, तब मुहब्बत करना जुर्म है और इन दोनो ने यही किया है। इन्हे सुबह से पहले बीस आदमियो के साथ हमले पर भेजा गया था। पता नही ये लोग ठीक वक्त पर पहुँचे या नही। हमला नाकामयाब रहा। तीन को छोडकर, सोचो तो नीमो, तीन को छोडकर वाकी सब आदमी मारे गए। (देवल की ओर मुड़कर) कान खोलकर सुन लो ! आज से शीकाकाई तुम्हारे साथ किसी हमले मे नही जाएगी। समझे ?

[शीकाकाई रोते हुए झोपडी के अन्दर भाग जाती है]

देवल : (गम्भीरता से) अगर तुम यही चाहते हो तो यही होगा। लेकिन इतना समझ लो, शीकाकाई मेरे रास्ते का पत्थर नही, मेरी ताकत है।

गोगो कभी-कभी ताकत भी कमजोरी वन जाती है।

नीमो . (गोगो से) कितने अजीव कानून है तुम्हारे !

गोगो . कानून कभी अजीव नही होते, नीमो !

नीमों और ये वाते हम सवको माननी चाहिए ?

गोगो · ये वाते हम सवको माननी होगी। अपनी आवाज हम सवको दवानी होगी। हमारे सामने सिर्फ एक आवाज होनी चाहिए—देश की आवाज।

नीमो : और देश यह चाहता है कि आदमी-औरत के आपसी रिश्ते टूट जाएँ ?

गोगो · हाँ, इस वक्त देश को यही चाहिए।

नीमों . क्या रिश्ते वक्त देखते है ?

गोगो : उन्हे देखना पडता है, उन्हे देखना चाहिए।

नीमों : और जो वक्त हमपर रुककर रह गया है, उसका जिम्मेदार कौन है ?

गोगो : वे लोग जिन्हे हम नेस्तनाबूद करने की कोशिश कर रहे है, हैवानो की वह टोली जिसके खूनी पजे के खिलाफ हम जग कर रहे है। (कुछ रुककर) एक-एक लमहा कीमती है, एक-एक आदमी कीमती है और कल के छापे मे सत्रह आदमी मारे गए। (ऊँचे स्वर मे) इन सव मौतो की जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है।

देवल : यह झूठ है। हमारे हमले का राज दुश्मन को पहले

ही मालूम हो चुका था।

नीमों : (साश्चर्य खड़ा होकर) क्या कह रहे हो, देवल ?

देवल : मैं सही कह रहा हूँ, बडे भैया ! दुश्मन को अच्छी तरह मालूम था कि किस जगह और किस वक्त हमला होगा।

गोगो : मुझे सब-कुछ साफ-साफ बताओ।

देवल : सुबह से पहले हम बीसो आदमी उस जगह पहुँच गए थे जहाँ हमला करना था। ऐसा लगता है कि दुश्मन हमारा पहले से ही इतजार कर रहा था क्योकि अचानक चारो तरफ से गोलियाँ चलने लगी। सँभालते-सँभालते भी दल के पूरे सत्रह आदमी काम आए। मेरे सर को छीलती हुई एक गोली सर्र से निकल गई, मै बेहोश हो गया। मुझे होश आया उस पहाडी खोह मे जहाँ शीकाकाई मुझे घसीटकर ले गई थी। (गिरे स्वर में) हम दोनो एक-दूसरे को चाहते जरूर है पर हमने काम के सामने किसी चीज को अहमियत नही दी। [अनावश्यक विराम—सब लोग अचानक चुप हो जाते है] दुश्मन को हमारे हमले का राज मालूम था—यह मैं दावे से कह सकता हूँ।

नीमों : बड़ी अजीब बात है !

गोगो : (गम्भीरता से) पर दुश्मन को यह राज कैसे पता चला ? (देवल से) तुम्हे और शीकाकाई को छोडकर मैने मातई और नीमो को भी यह नही बताया था कि तुम्हे दुश्मन की सबसे बडी

रसद-चौकी पर हमला करने भेजा जा रहा है। (टहलते हुए) तुम दोनो के अलावा किसी को कानो-कान खबर न थी।

(रुककर देवल की ओर मुड़ते हुए) फिर यह राज कैसे खुला ?

देवल : मेरी खुद समझ मे नही आ रहा है।

गोगो . जरूर हम सब मे कोई एक दुश्मन का भेदिया है।

नीमों : क्या कह रहे हो, गोगो ! इतने दिन हम सबको साथ-साथ रहते हो चुके है, आज तक कभी कोई अन्दरूनी भेद बाहर नही पहुँचा।

गोगो · क्या तुमने हमारी पिछली बातो पर गौर किया है ? नीमो, कई बार मुझे यह शक हुआ कि कोई हमपर नजर रखे है, कोई हमारी बाते बाहर पहुँचाता है।

नीमों · मै समझता हूँ कि तुम वहम के शिकार हुए हो, गोगो ! सोचो तो, हम लोगो मे ऐसा कौन हो सकता है ?

गोगो यह मैं नही जानता पर कोई है जरूर। (कुछ सोचकर ऊँचे स्वर मे पुकारता है) शीकाकाई···! शीकाकाई !

देवल · क्या तुम्हे शीकाकाई पर शक है ?

गोगो · मुझे सब पर शक है, देवल ! अपने-आप पर भी।

[शीकाकाई अन्दर से आती है]

शीकाकाई : तुमने मुझे बुलाया, सरदार ?

गोगो : हाँ, शीकाकाई ! मुझे एक बात पूछनी है।

[शीकाकाई गोगो की ओर देखती है]
आज सुवह हमले पर जाने से पहले क्या यह वात तुमने किसी को वताई थी ? क्या तुमने किसी को यह वताया था कि तुम देवल के साथ चीनियो की सवसे वडी रसद-चौकी को वारूद से उडाने जा रही हो ?

शीकाकाई : हाँ ।
देवल : (साश्चर्य) शीकाकाई !
गोगो : (तीव्र स्वर मे) किसको वताया था ?
शीकाकाई : सुहाली को ।
नीमों : (साश्चर्य) सुहाली को ?
शीकाकाई : हाँ ।

गोगो : (नीमों से) नीमों, क्या सुहाली कल रात-भर तुम्हारे साथ रही है ? तुम आधी रात के वाद मेरे साथ हमले पर गए थे, क्या उससे पहले तुमने सुहाली को झोपडी से वाहर निकलते देखा था ?
[नीमो एक बार गम्भीरता से गोगो और शीकाकाई की ओर देखता है, फिर वह बिना उत्तर दिए दौड़-कर पुल के वाहर निकल जाता है । क्षण-भर वाद वह सुहाली की वाँह पकड़कर खीचते हुए नीचे लाता है]

नीमों : (सुहाली की वाँह पकड़े हुए) हाँ, गोगो, सुहाली को मैंने झोपडी के वाहर जाते देखा था ।
[सुहाली हाथ छुडाने का कोशिश करती है । गोगो आगे वढकर सुहाली की वन्दूक छीन लेता है । नीमो सुहाली का हाथ मजवूती से पकड़े रहता है]

गोगो : पूरी वात वताओ !

नीमों . आधी रात के करीव वह शीकाकाई के पास से लौटकर मेरे पास आई। मै बाहर पहरे पर था। उसने मुझसे इशारे से कहा कि उसे बहुत जोर से भूख लगी है। मैने जवाव दिया कि खाने का सामान खत्म हो चुका है। उसने ढलान के नीचे वाली झाडियो की ओर इशारा किया। झाडियाँ जगली बेरो से लदी थी। मैने उसे अपना छुरा देकर बेर ले आने को कहा।

गोगो और वह चली गई ?

नीमों : हाँ, वह चली गई।

गोगो . फिर कितनी देर वाद वह लौटी ?

नीमो . वहुत देर वाद।

गोगो · जब वह लौटकर आई तो तुमने उससे देर की वजह पूछी ?

नीमो · हाँ।

गोगो . उसने क्या कहा ?

नीमो . उसने कहा कि जव वह झाडियो मे बेर ढूँढ रही थी, तभी कुछ फासले पर एक चीनी गश्ती दस्ता जा रहा था। इसलिए वह झाडियो मे छुप गई।

गोगो . और इसलिए देर से आई ?

नीमो हाँ।

गोगो · (सुहाली से निहायत मुलायम आवाज मे) सुहाली, तो जव तुम जगली फलो को काट रही थी तो तुम्हे दुश्मन का एक गश्ती दल दिखाई पडा ?

[सब सुहाली की ओर देखते है । वह सहमति-सूचक सर हिलाती है]
और तुम झाडियों मे छुप गई ?
[सुहाली सहमति-सूचक सर हिलाती है]
और बहुत देर तक छुपी रही ?
[सुहाली सहमति-सूचक सर हिलाती है]
(अचानक चीखकर) तुम झूठ बोलती हो। तुम सिर्फ झाड़ियों तक नही बल्कि उसके आगे, बहुत आगे तक गई थी। वहाँ तुम्हारा कोई इतजार कर रहा था। और तुमने उसे बताया कि सुबह से पहले सियाँग नदी के पास वाली रसदगाह पर हमला होने जा रहा है।
[सुहाली बड़ी तेजी से असहमति-सूचक सर हिलाती है]
(क्षण-भर गौर से सुहाली का चेहरा देखता रहता है) तो तुमने कोई भेद दुश्मन तक नही पहुँचाया ?
[सुहाली असहमति-सूचक सर हिलाती है]
(गम्भीरता से) और तुम बिलकुल बेकसूर हो ?
[सुहाली सहमति-सूचक सर हिलाती है]
(नीमो से आज्ञाभरी आवाज मे) नीमो, सुहाली का हाथ छोड दो।
[नीमो गोगो की आज्ञा का पालन करता है। गोगो अपनी जेब से एक गुजला-गुजलाया काले कपड़े का टुकड़ा निकालकर नीमो को देता है]

गोगो · इसे सुहाली की आँखो पर बाँध दो।

नीमो : क्यो ?

गोगो : जो मै कह रहा हूँ वह करो!

[नीमो गोगो की आज्ञा का पालन करता है]

और अब उसे पत्थर पर ले जाकर खडा कर दो।

[नीमो सुहाली का हाथ पकडकर पत्थर पर खडा कर देता है]

(नीमो से) नीमो, अपनी बन्दूक उठाओ!

नीमो · गोगो!

गोगो : (डाँटकर) खबरदार जो तुम्हारे हाथ काँपे! उसने गद्दारी की है। (ऊँची आवाज मे) उठाओ बन्दूक!

[नीमो अपनी बन्दूक का निशाना सुहाली की ओर करता है]

(अपना दाहिना हाथ ऊँचा करके, एक-एक शब्द पर जोर देते हुए) और मेरे हाथ के गिरते ही तुम गोली चलाओगे।

[क्षण-भर का सन्नाटा—शीकाबाई देवल के पास भौचक्की खड़ी है]

(नीमो से) तैयार!

सुहाली : (चीखकर) ठहरो!

नीमो : (साश्चर्य) सुहाली!

[सुहाली अपनी आँखो पर से बँधी पट्टी खोल देती है]

सुहाली· तुम· तुम गूँगी नही हो ?

[झीमाकाई और देवल साश्चर्य सुहाली को देखते हैं]

सुहाली : (दांत पीसकर) हाँ ·····मैं गूंगी नहीं हूँ। मैं बोल सकती हूँ।

नीमो : (साश्चर्य) सुहाली ··

सुहाली : (नफरत से) खबरदार जो मुझे सुहाली कहा ! (चीखकर) मुझे तुम्हारे इस नाम से नफरत है। मंगली कहो मुझे।

नीमो : मंगली ?

सुहाली : हाँ, मंगली। और मुझे कोई नहीं पकड़ सकता।

[सुहाली बिजली की-सी तेजी से अपनी अन्दरूनी जेबों मे हाथ डालकर कुछ निकालकर मुँह मे रखने की कोशिश करती है]

गोगो : (चीखकर) नीमो !

[नीमो लपककर सुहाली के दोनों हाथों को पीछे करके अपने हाथों से जकड़ लेता है]

सुहाली : (अपने-आपको छुड़ाने की कोशिश करती हुई) मुझे तुमसे नफरत है ! मेरे देश के एक-एक बच्चे को तुमसे नफरत है ! (चीखकर) तुम सबसे !

नीमो : (दांत पीसकर) तेरी और तेरे देश की नफरत का जवाब हम देते रहेंगे।

सुहाली : मेरे देश का जवाब ·(व्यंग से) तुम लोग दोगे ? (पागलों की तरह हँसकर) मेरे देश को कोई जवाब नहीं दे सकता।

नीमो : इस बात का फैसला आगे आने वाला वक्त करेगा।

सुहाली : बेवकूफ ! फैसले का वक्त आ चुका है और हमे

मालूम है कि वक्त किसके साथ है।

गोगो : हर पागल आदमी को वक्त अपना ही लगता है। खूनी दरिन्दे अपनी भूख मिटाने मे अक्सर मौत खा लेते है।

सुहाली : मौत तो तुम लोगो के लिए बनी है। हमारे लिए तो चमकते हुए लाल सितारे की ठडी रोशनी और एक ऐसी जिन्दगी है जिसमे कोई गम नही, कोई परेशानी नही, सिर्फ शाति है, कभी न टूटने वाली शाति।

गोगो : दूसरो की शाति का खून करके ही तुम्हारा लाल सितारा चमकता है।

सुहाली (दाँत पीसकर) हाँ। लाल सितारे को चमकने के लिए उन भेड-बकरियो का खून चाहिए जो उसके रास्ते मे आते हैं। (उन्मादभरे स्वर मे) और लाल सितारा बढ रहा है। अब उसे चमकने के लिए दूसरे देशो का आसमान चाहिए। (पूरे गले से चीखकर) उसे सब देशो के आसमान चाहिए।

[मातई का पुल पर तेजी से प्रवेश]

मातई : गोगो !

[सब लोग ऊपर देखते है]

दुश्मन की फौजे सियाँग नदी पार करने वाली है।

[सुहाली अचानक तीर की-सी तेजी से पुल की सीढियों की ओर भागती है]

नोमों (चीखकर) सुहाली !

[सुहाली पुल पर पहुंच जाती है]

(चीखते हुए) सुहाली, रुक जाओ···नही तो मै गोली मार दूंगा।

[सुहाली अनसुनी करके बाहर की ओर भागती है। नीमो गोली चला देता है। गोली सुहाली के बाएँ कन्धे पर लगती है। वह क्षण-भर के लिए लड़खडाती है; फिर दाहिने हाथ से बाएं कन्धे को पकड़कर भागती है। मातई भौंचक्की-सी खडी रहती है। सुहाली बाहर भाग जाती है। नीमो उसके पीछे चिल्लाता हुआ दौडता है। वह दौडते हुए पुल से बाहर चला जाता है। क्षण-भर बाद एक बार गोली चलने की आवाज और सुहाली की दर्दभरी चीख सुन पडती है। शीका-काई और देवल गम्भीरता से अपने सर नीचा कर लेते है। नीमो थका-थका-सा सर झुकाए पुल पर आता है]

मातई · तूने ··तूने उसे मार डाला ?

नीमो . (गम्भीरता से) हाँ, माँ, वह दुश्मन की जासूस थी।

मातई (साश्चर्य) जासूस !

नीमों · (सर हिलाकर) हाँ।

[नीमो पुल से नीचे उतरकर आता है और खामोशी से एक पत्थर पर बैठ जाता है; उसके पीछे-पीछे मातई भी उतरकर आती है]

मातई · (गोगो से) कौन अपना है और कौन पराया, यह बात इन्सान को कितना नुकसान उठाकर पता

लगती है ! (नीमो के पास जाकर प्यार से) नीमो···
मेरे बेटे ··तुझे रंज है ?

नीमो : (सर उठाकर) रंज ? मुझे खुशी है, माँ, खुशी ।

गोगो : दरअसल हमें न तो खुशी होनी चाहिए न रंज । जो काम हमने सर-माथे पर लगाया है उसमें रंज और खुशी को कोई जगह नहीं । जब तक हमारा काम खत्म नहीं हो जाता तब तक हमें इन सब खयालों से ऊँचा रहना होगा । (कुछ रुककर) और हमारा काम अभी खत्म नहीं हुआ यह सिर्फ शुरूआत है, शुरूआत । (कुछ रुककर) जानते हो तुम लोग, मातई क्या खबर लाई है ? दुश्मन की फौजों का भारी जमाव सियाँग नदी के उस ओर है । जानते हो इसका क्या मतलब है ?

देवल : दुश्मन सियाँग नदी पार करना चाहता है ।

गोगो : क्यों ?

देवल : इसलिए कि नया हमला बड़े पैमाने पर किया जा सके ।

गोगो : बिलकुल ठीक । नई जमीनों में दूर तक धँसने की नापाक बात दुश्मन के दिमाग में है । (अचानक देवल की ओर मुड़कर) और जानते हो वह सियाँग नदी कैसे पार करेगा ?

देवल : सिर्फ एक ही रास्ता है । सियाँग नदी का पुल ।

गोगो : हाँ । सियाँग नदी का पुल । (कुछ रुककर) शीकाकाई, तुम पहरे पर जाओ !

[शीकाकाई चुपचाप अपनी बन्दूक उठाकर पुल से बाहर चली जाती है]

मातई : फौजी कह रहा था, हिन्दुस्तानी जवानो की नई कुमक आने वाली है।

गोगो : मै तुम्हारा मतलब समझ रहा हूँ, मातई! जब तक अपनी फौजे दोबारा नही आ जाती तब तक हमे दुश्मन को रोके रखना है।

नीमों : पर हम उन्हे कैसे रोक पाएँगे?

गोगो : (गम्भीरता से) सियाँग नदी का पुल तोडकर।

नीमों : पुल तोडकर? लेकिन हमारी तादाद…

गोगो : ज्यादा आदमियों की जरूरत नही है। (कुछ रुककर) सिर्फ तीन जने चाहिए?

नीमों : सिर्फ तीन?

गोगो : हाँ, नीमो, सिर्फ तीन! मै, तुम और देवल। बढाओ अपने हाथ!

[नीमो आगे बढ़कर दोनो हाथ बढ़ा देता है। गोगो उनपर अपने हाथ रख देता है। फिर वे दोनो देवल की ओर देखते है। आगे बढ़कर वह भी अपने हाथ रख देता है। तीनो एक-दूसरे को देखते है। मातई पैरो पर झुककर आसमान की ओर हाथ करती है]

मातई : ओ मेरे दोनी पोलो! इन तीन आदमियो मे तू सौ-सौ विजलियाँ भर दे!

[तीनो अपने हाथ अलग करते है और अपनी-अपनी जगहो पर चले जाते है। मातई एक पत्थर पर बैठ जाती है]

गोगो · अव एक-एक वात गौर से सुनो ! शाम के साए घिर आए है। दुश्मन आधी रात के पहले या वाद मे पुल पार करना शुरू कर देगा। इसलिए हमे अपना काम फौरन खत्म करना होगा। (कुछ रुककर) हमे अपने काम को दो हिस्सो मे बाँटना है।

देवल : दो हिस्सो मे ?

गोगो · हाँ, देवल ! हम तीनो मे से दो आदमियो को तो पुल उडाने के लिए जाना होगा और एक आदमी पुल के ठीक सामने वाली पहाड़ी पर जाएगा।

नीमो . क्यो ?

गोगो : इस पहाडी पर चीनियो ने एक छोटी-सी चौकी वनाई है और अपनी मशीनगने लगा दी है।

[नीमो और देवल गौर से सुन रहे हैं]

पहाडी की ऊँचाई से दुश्मन सियॉग नदी के पुल पर चौवीसो घण्टे निगरानी रखता है। पहाडी की चोटी पर लगी हुई इन मशीनगनो की आँखे हमेशा नीचे वाले पुल को घूरती रहती है। जव रात आती है तो पहाडी से एक तरह की तेज रोशनी घूमने लगती है। यह रोशनी वरावर शैतान की आँख की तरह पुल के ऊपर और आस-पास की जमीन पर पडती रहती है। (कुछ रुक-कर) यह पुल तभी उडाया जा सकता है जव पहाडी की मशीनगनो का मुँह वद हो जाए और रोशनी फेकने वाले काँच वरवाद हो जाएँ।

देवल : इसका मतलब यह है कि पहले मशीनगनो का सफाया करना होगा ?

गोगो : हाँ ; और उनका सफाया होते ही पुल की धज्जियाँ उड़ा दी जाएँगी।

नीमो : लेकिन पुल उडाया कैसे जाएगा ?

गोगो यह काम मुझपर छोड दो। पिछले हमले मे जो एक पेटी हम दुश्मन की छावनी से ले भागे थे, उसमे ऐसे बम है जो किसी चीज मे चिपका दिए जाने के बाद काफी देर से फटते है। (मुस्करा-कर) आज दुश्मन का बारूद खुद उसी का रास्ता रोकेगा।

नीमो वह पेटी है कहाँ ?

गोगो · एक दूसरी जगह। ढलान के नीचे वाले पत्थरों मे ढँकी पड़ी है।

देवल और मशीनगनो का खातमा कैसे होगा ?

गोगो : मशीनगनो को बरबाद करने की एक नई तरकीब मैंने सोची है और मै समझता हूँ सिर्फ यही एक तरकीब है।

देवल : क्या ?

गोगो . किसी एक को अपने तमाम जिस्म पर बारूद की पट्टियाँ लपेटकर, पीछे से पहाडी पर चढना होगा। इस शख्स के पास हथगोले भी होने चाहिएँ। फिर उस चोटी वाली खाई के दायरे मे पहुँचकर वह दो-चार गोलो से ही काम तमाम कर सकेगा।

देवल . फिर जिस्म मे बारूदी पट्टियाँ बाँधने का क्या मतलब है ?

गोगो : बहुत बड़ा मतलब है। मान लो खाई के करीब आने पर और उसपर हमला होने से पहले उस शख्स पर दुश्मन की निगाह पड़ गई अथवा किसी ने उसपर गोली चला दी, तो जानते हो क्या होगा ?

नीमो : क्या होगा ?

गोगो : (गम्भीरता से) बारूदी पट्टियो से बँधा वह आदमी उड जाएगा।

[देवल और नीमो एक-दूसरे की ओर देखते है। मातई उठकर खडी हो जाती है]

और उसके साथ ही दुश्मन की मशीनगनें भी उड़ जाएँगी।

देवल . (दृढता से) गोगो, पहाडी पर मै जाऊँगा।

नीमों . (डाँटकर) देवल, तुम गोगो के साथ पुल उडाने नही जा रहे हो। पहाडी पर मै जाऊँगा।

देवल · लेकिन यह पहले मैने सोचा है, बडे भैया!

नीमों : तुम्हारे सोचने से क्या ? यह काम मै करूँगा।

देवल गोगो!

गोगो · (क्षण-भर सोचकर) सवाल काम करने का है। कोई भी करे इसे।

नीमों · (गोगो से) इसका फैसला तुम दोनो ही करो।

गोगो : अगर कोई और बात जाननी है तो पूछो!

देवल . मुझे जानना है। तुम्हारी गैरहाजिरी मे दल का सरदार कौन है ?

गोगो (क्षणिक विराम के पश्चात्) तुम।

देवल ठीक है।

गोगो · अच्छा मै जा रहा हूँ। जब थोडी देर बाद किसी कुत्ते के भौकने की आवाज सुनाई दे तो समझ लेना कि मै पेटी से बम निकाल चुका हूँ। फिर जो भी मेरे साथ जा रहा हो वह फौरन आ जाए और दूसरा पहाडी वाले काम पर चला जाए।
[गोगो मातई की ओर मुडता है]
अच्छा मातई, अगर जिन्दा रहा तो फिर मिलूँगा।
[गोगो तेजी से सीढ़ियाँ चढ़कर बाहर चला जाता है]

देवल . माँ, बारूद की पट्टियाँ कहाँ है ?

मातई (नाले के अन्दर रखी पेटियो की ओर इशारा करके) उस पेटी मे।

देवल उन्हे निकाल दो।
[मातई नाले की ओर बढती है]

नीमों ठहरो माँ !
[मातई रुक जाती है]
(देवल से) देख रे लडके, जिद न कर। पहाडी वाला काम मेरा है, तू गोगो के साथ जा।

देवल : तुम मुझे बुजदिल समझते हो ?

नीमों (मुलायम स्वर मे) नही रे, क्या मै तुम्हे जानता नही ?

देवल : (गुस्से से) तो फिर मुझे क्यो रोक रहे हो ?
[नीमो आगे बढकर दोनो हाथ देवल के गालो पर रख देता है]

नीमो · (प्यार से थरथराती आवाज मे) मै तुझे बहुत प्यार करता हूँ रे !

[देवल अचानक 'बडे भइया' कहकर नीमो से लिपट जाता है। पीछे खडी मातई अपने आँसू पोछती है]

(अलग हटकर) बडा भाई बाप की जगह होता है, देवल! मेरे रहते तू मौत के मुँह मे नही जाएगा।

देवल . (नीमो को ध्यान से देखकर) और तुम मेरे रहते मौत के मुँह मे जाओगे, बडे भइया? यह नही हो सकता।

नीमों · (अचानक क्रोधित होकर) क्यो नही हो सकता? मै तुझसे उम्र मे बडा हूँ। मै कहता हूँ, तू पहाडी पर नही जाएगा। (मातई से) माँ, वह पट्टियाँ निकाल दो।

देवल · तुमने सुना था, गोगो क्या कह रहा था? उसकी गैरमौजूदगी मे दल का सरदार मै हूँ।

नीमों . अरे जा, बडा आया है! (मातई की ओर मुडकर) माँ!

देवल · (चीखकर) नीमो! · मै तुम्हे हुक्म देता हूँ कि बारूद की पट्टियाँ निकालो!

[नीमो देवल को एक क्षण घूरकर देखता है]

यह मेरा · तुम्हारे सरदार का हुक्म है!

[नीमो चुपचाप नाले मे एक रखी पेटी उठा लाता है। मातई उसकी मदद करती है]

खोलो!

[पेटी खोली जाती है]

इन्हे मजबूती से मेरे जिस्म पर बाँधो!

[मातई रोते हुए और नीमो गम्भीरता से देवल की आज्ञा का पालन करते हैं]

मातई, आँसू पोछ डालो !

[मातई आँसू पोछती हैं]

नीमो, जरा कसके बाँधो !

[नीमो कसकर बाँधता है। देखते-देखते देवल के शरीर पर बारूद की पट्टियाँ बाँध दी जाती है]

मातई, मुझे प्यार करो !

[मातई उसका माथा चूमती है]

नीमो, तुम भी।

[नीमो उसका माथा चूमता है। पृष्ठभूमि मे दूर कुत्ते भौंकने की आवाज आती है]

नीमो, यह तुम्हारे जाने का इशारा है। फौरन जाओ !

[नीमो एक बार जल्दी से देवल का माथा चूमता है, फिर फुर्ती से मातई के गले लगकर तेजी से पुल के बाहर निकल जाता है। मातई नीमो को आँसू-भरी आँखो से देखती रहती है]

(अपनी कमर मे बँधे हथगोलो की जाँच करके) मेरी बन्दूक ?

[मातई चुपचाप एक बन्दूक उठाकर दोनो हाथो से देवल को देती है, फिर अचानक देवल कहकर उससे लिपट जाती है]

(अपने-आपको अलग करके दृढ़ता से) आँसुओ की बौछार मत करो, मातई ! तुम क्या समझती हो देवल मर जाएगा ? वह कभी नही मर सकता। वह उस बच्चे मे जिन्दा रहेगा जिसका वाप बनने जा रहा है।

मातई . (खुशी और आश्चर्य से चीखकर) देवल !

देवल (अचानक मुलायम स्वर मे) यह सच है, माँ ! शीकाकाई की कोख से तुम्हारे देवल का खून जन्मेगा। भगवान दोनी पोलो से मनौती करो, माँ, कि जव वह धरती की रोशनी देखे तो उसके हाथ मे भी एक वन्दूक हो।

[मातई के दोनो कन्धो पर हाथ रखकर]

अच्छा, माँ !

[मातई हर्ष और आश्चर्य से देवल को देखती है। देवल सीढियो की ओर मुडता है। अचानक शीकाकाई का पुल पर प्रवेश]

शीकाकाई . (पुल पर से) देवल, मै भी तुम्हारे साथ चलूँगी।

देवल लेकिन यह गोगो का हुक्म नही है।

शीकाकाई . मै किसी का हुक्म नही मानूँगी।

देवल (डाँटकर) शीकाकाई !

शीकाकाई . (रोते हुए) मुझे अपने साथ ले चलो, देवल, मुझे अपने साथ ले चलो !

[देवल बिना कोई उत्तर दिए पुल पर आ जाता है]

देवल . (शीकाकाई के दोनो गालो पर हाथ रखकर) तुम माँ वनने वाली हो, शीकाकाई, देवल के बेटे की माँ।

[देवल तेजी से बाहर चला जाता है। शीकाकाई वहीं पुल पर खड़ी रोती रह जाती है। मंच पर डूबते हुए सूरज की रोशनी धीरे-धीरे कम हो जाती है और कुछ क्षणों में ही बिल्कुल अन्धकार छा जाता है। पृष्ठभूमि से तूफानी हवा का शोर धीरे-धीरे उभरता है। मातई अँधेरे में टटोलकर पत्थर पर खड़ी हो जाती है और नाले के ठीक ऊपर लटकी हुई लालटेन जलाती है। लालटेन जलाते ही मंच पर प्रकाश पुन: लौटता है। जब दोबारा रोशनी होती है तो मातई पत्थर पर खड़ी दियासलाई की तीली बुझाती दिखाई पड़ती है। ऊपर पुल पर शीकाकाई निःशब्द भाव से रोते-रोते बैठ जाती है]

मातई : (नीचे से अचानक साश्चर्य) शीकाकाई!

[मातई सीढ़ियों पर चढ़कर पुल पर जाती है और शीकाकाई को दोनों हाथों का सहारा देकर नीचे लाती है। शीकाकाई निःशब्द भाव से रोते हुए नीचे आती है। मातई उसे पत्थर पर बैठाती है। तूफानी हवा तेज होकर कुछ धीमी पड़ जाती है]

शीकाकाई! गोगो कहता था तुम एक बहादुर लड़की हो।

शीकाकाई : गोगो झूठ कहता है, माँ, झूठ!

मातई : (मुस्कराते हुए) पगली, गोगो कभी झूठ नहीं कहता।

[शीकाकाई उसकी ओर देखकर सर नीचा कर लेती है]

(मुस्कराते हुए) और सुन, देवल कह रहा था तेरा पैर भारी है। क्या यह झूठ है ?

शीकाकाई (शरमाते हुए) नही, माँ !

मातई (खुशी से चीखती-सी) अरी ओ ! अब तो मै दादी माँ बनूँगी। है न, बहू! (अचानक गम्भीरता से) बहू!

शीकाकाई (भावावेश मे) माँ !

[शीकाकाई क्षण-भर मातई को देखती रहती है ; फिर अचानक उसके गले से लिपट जाती है]

मातई मेरी बहू ! मेरी बच्ची ! मेरी शीकाकाई !

[दोनो एक-दूसरी से लिपटी रहती है। बर्फीला तूफान अचानक तेज होकर धीमा पडता है। डोर से लटकी हुई लालटेन इधर-उधर हिलती है]

(शीकाकाई को अलग हटाते हुए) और जानती है मै उसका क्या नाम रखूँगी ? लालटेन।

शीकाकाई लालटेन यह तो बडा अजीब नाम है, माँ !

मातई (गम्भीरता से) इस अजीब वक्त मे पैदा होने वाले बेटे का इससे अच्छा नाम और क्या हो सकता है ! हमारे तूफानो मे हमे रोशनी दिखाएगा लालटेन। (हँसती है) शीकाकाई, कितनी अजीब बात है ! कभी-कभी कहाँ-कहाँ के लोग अचानक जुड जाते है (क्षणभर रुककर) और जुडे-जुडाए लोग टूट जाते है।

शीकाक़ाई : (हल्की-सी चीख के साथ) ऐसा न कहो, माँ, ऐसा न कहो !

[तूफान तेज होकर धीमा पड़ता है। अचानक टर्च-लाइट से फेंकी हुई रोशनी पुल के ऊपर से निकल जाती है]

मातई : शीकाकाई ! तूने कुछ देखा ?

शीकाकाई नहीं तो !

मातई : कोई रोशनी फेंक रहा है।

[रोशनी फिर निकल जाती है। तूफानी हवाएँ तेज होती हैं]

मालूम देता है, वे फिर लौट आए हैं।

[मातई लपककर पहले पत्थर के नीचे पड़े हुए काले कपड़े से लालटेन को ढक देती है, फिर वह अपनी बन्दूक उठाकर पुल की ओर भागती है। शीकाकाई भी एक बन्दूक उठाती है]

तू वहीं ठहर !

[रोशनी का गोला पुल के ऊपर से निकल जाता है। मातई दौड़कर पुल के अन्त में जाकर खड़ी हो जाती है और उसी ओर गौर से देखती है। तूफानी हवाएं चलती रहती हैं]

(नीचे की ओर देखते हुए) शायद वही कुत्ते हैं जो फौजी के पीछे आए थे।

[तूफान तेज होकर धीमा पड़ता है]

(फुसफुसाकर) वे लोग इधर ही आ रहे हैं।

[रोशनी का गोला पुल के ऊपर से निकल जाता है, मातई शीकाकाई को ऊपर आने का इशारा करती है। शीकाकाई ऊपर जाती है]

शीकाकाई! आओ हम दोनो उस पत्थर की आड़ मे छुप जाएँ। जब वे बहुत पास आ जाएँगे तो हम एक-एक को गोलियो का निशाना बनाएँगे।

[तूफान तेज होकर धीमा पड़ता है। मातई और शीकाकाई गौर से उसी ओर देखती हैं]

मैं बन्दूक चलाऊँगी, तुम हथगोले फेकना।

[रोशनी का गोला पुल के ऊपर से निकल जाता है]

[मातई शीकाकाई को अपने पीछे आने का इशारा करके झुककर पुल के बाहर निकल जाती है। शीकाकाई भी झुककर बाहर जाती है]

[तूफान तेज होकर धीमा पडता है। झोपड़ी के बाहर कोई चीनी स्वर मे पुकारता है, जैसे ऊँचे स्वर मे वह किसी को आदेश दे रहा हो। रोशनी का गोला पुल पर से निकल जाता है। क्षण-भर बाद ही अचानक गोलियो के चलने की आवाज आती है। उसके पश्चात् मशीनगन चलती है। फिर हथगोलो का विस्फोट सुनाई पडता है और उनकी चमक दिखाई पड़ती है। अचानक रोशनी पुल के बीच में आकर रुक जाती है। गोली चलने की आवाज के साथ ही रोशनी बुझ जाती

है। तूफानी हवा का शोर ऊँचा होकर धीमा पड़ता है। कुछ क्षणो के पश्चात् मातई लँगडाती हुई पुल पर आती है। वह बन्दूक का सहारा लिए हुए है। शीकाकाई उसके पीछे है। मातई शीकाकाई के सहारे धीरे-धीरे सीढियों के नीचे आकर पत्थर पर बैठ जाती है]

शीकाकाई : क्या तुम्हे बहुत चोट आई है, माँ ?

मातई : (मुस्कराकर) नही, सिर्फ टखने छिल गए है।

[शीकाकाई दौडकर झोंपडी के अन्दर जाती है और फटे हुए कपड़े का एक टुकडा और लकडी के प्याले में बूटी का रस लाती है। वापस आकर शीकाकाई झुककर बैठ जाती है और मातई के जख्मी टखनो पर बूटी का रस लाकर कपडा बाँधती है]

(शीकाकाई की ठोड़ी अपने हाथ से ऊँची उठाकर मुस्कराते हुए) लालटेन की माँ !

[शीकाकाई अपना चेहरा मातई के पैरो मे छुपा लेती है। तूफान तेज होकर धीमा पड़ जाता है। अचानक दूर पृष्ठभूमि मे एक भयंकर विस्फोट की आवाज सुनाई पड़ती है। मातई और शीकाकाई चौंक पड़ती है]

(खडी होकर पागलपन-भरी प्रसन्नता मे) पुल टूट गया, शीकाकाई, पुल टूट गया !

[पुल पर अचानक जख्मी हालत मे लडखडाते हुए नीमो का प्रवेश]

मातई (मुडकर चीखती है) नीमो !

नीमो . (पुल पर दोनो हाथ रखकर उखडते हुए स्वर मे) तुमने यह आवाज सुनी, माँ ? (अचानक पागलो की तरह हँसकर) पुल टूट गया ! पुल टूट गया !

मातई . (लँगडाती हुई सीढियो की ओर बढती है) नीमो !

नीमो (आगे बढता है) और जब वह टूटा तो दूर-दूर तक की पहाडियो मे वक्त की आवाज गूँज उठी (कुछ रुककर) और तेरा नीमो तेरे पास वापस आ गया ।

[मातई लँगडाती हुई सीढ़ियो से ऊपर पुल पर चढ़ती है]

खबरदार, मेरे पास मत आना ! (मातई रुक जाती है) दूर रहो मुझसे !

मातई : नीमो !

नीमो अगर तुम मुझको छूना चाहती हो, माँ, तो अपने दुनाली वाले हाथो को आगे बढाओ ।

मातई तू कैसी बाते कर रहा है बेटे ?

नीमो (दु खी स्वर मे) देखती नही, मेरे जख्मो मे मेरी जान अटकी हुई है । (पीडा से छटपटाते हुए) उसे आजाद कर दो, माँ ! माँ !

[मातई पीछे हटती है]

मातई नही नही मै ऐसा नही कर सकती·· मै ऐसा नही कर सकती

नीमो तुम मेरी तकलीफ देख सकती हो मुझे आराम नही दे सकती ? तुम· (चीखकर) तुम बुजदिल हो, माँ !

मातई : खबरदार जो तूने अपनी माँ को बुजदिल कहा !

नीमों : (चीखकर) तो फिर तुम मुझे आराम क्यो नही देती, माँ, मुझपर गोली क्यो नही चलाती ?

मातई : (प्यार से कांपती आवाज मे) नीमो, तू मेरा बेटा है।

नीमों : और तुम्हारे बेटे को बहुत तकलीफ है। वह अपना काम पूरा कर चुका है। उसका जिस्म गोलियो से छलनी है। वह जिन्दा नही रह सकता। और जब तक वह मरता नही, उसे तकलीफ है' 'बहुत तकलीफ ' क्या तुम माँ होकर उसकी आखिरी तमन्ना पूरी नही करोगी ?

मातई : (क्षणभर दृढता से) अच्छी बात है। आज तक जो किसी माता ने अपने बेटे के साथ नही किया, वह मै तेरे साथ करूँगी। तू आराम से मरेगा, मेरे लाल ''तू आराम से मरेगा।

[मातई लँगडाती हुई नीचे बन्दूक लेने उतरती है। पत्थर से अपनी बन्दूक उठाकर रोते हुए वह अपनी बन्दूक का घोडा चढाती है]

शीकाकाई . (भय से) माँ ' तुम अपने बेटे का खून करोगी ?

मातई · नही ! मै अपने खून को आराम दूंगी। मेरा बच्चा तडप-तडपकर नही मरेगा।

[मातई जैसे ही बन्दूक नीमो की ओर घुमाती है वैसे ही नीमो मर जाता है। उसका सर और दोनो हाथ पुल मे नीचे की ओर लटक जाते है। उसके हाथो के झटके से लालटेन मे बँधा हुआ काला कपडा नीचे गिर

जाता है और मंच पर पूरी लालटेन की रोशनी फैल जाती है। नीमो के दोनो हाथ लालटेन के इर्द-गिर्द हैं। तूफानी हवाएँ तेज होकर कम होती हैं]

(चीखकर) नीमो···!

[मातई अपनी बन्दूक वहीं पटककर पुल पर लँगड़ाते हुए जाती है। वह नीमो की मृत देह को पागलो की भांति चूमती है और रोती है। दूसरी ओर से गोगो का प्रवेश। वह सर झुकाए धीरे-धीरे नीमो की लाश तक आता है। मातई धीरे-धीरे उठकर खडी होती है]

(गम्भीरता से) मैं जानती हूँ तुम क्या खबर लाए हो।

गोगो : हाँ, मातई, देवल हमेशा के लिए जी गया।

[नीचे शीकाकाई रोते-रोते बैठ जाती है]

मातई . (गर्व से) वह मातई का बेटा था, गोगो! (नीमो की ओर देखकर) और यह भी मातई का बेटा है।

गोगो : तुम्हारे लाखो बेटे और है, मातई! वे सब आ रहे है आजादी के देवता को अपना जवान लहू देने के लिए।

[अचानक पृष्ठभूमि से फौजी मार्च और बिगुल की आवाज सुनाई देती है]

उस लडकी से कहो, अपना कलेजा और सख्त कर ले, क्योकि यह शुरूआत है—शुरूआत।

[मातई पुल से नीचे उतरकर शीकाकाई को उठाती है]

मातई . (आँसुओ के बीच मुस्कराते हुए) शीकाकाई ! शीकाकाई, तूने सुना, गोगो क्या कह रहा है ? (भावावेश मे) तुझे तो खुश होना चाहिए ··देख, मै भी खुश हूँ । हम सबको खुश होना चाहिए · और तुझे तो सबसे ज्यादा । तेरे अँधियारे पाख का बेटा उजियारे पाख मे जन्मेगा· · देख, उधर !

[मातई जलती हुई लालटेन की ओर इशारा करती है]

यह गुरुआत है · गुरुआत···!

[अचानक पृष्ठभूमि मे फौजी मार्च और बिगुल के स्वर तेज होते हैं । मातई और शीकाकाई जलती हुई लालटेन को गौर से देखती ह । गोगो नीमो की लाश उठाने को झुकता है । मच पर धीरे-धीरे पूर्ण अधकार हो जाता है । सिर्फ लालटेन जलती रहती है, उसपर स्पॉटलाइट केन्द्रित रहती है । फौजी मार्च और बिगुल की आवाजें निकट आकर सारे वातावरण मे गूंज उठती हैं]

धीरे-धीरे पर्दा गिरता है ।

००